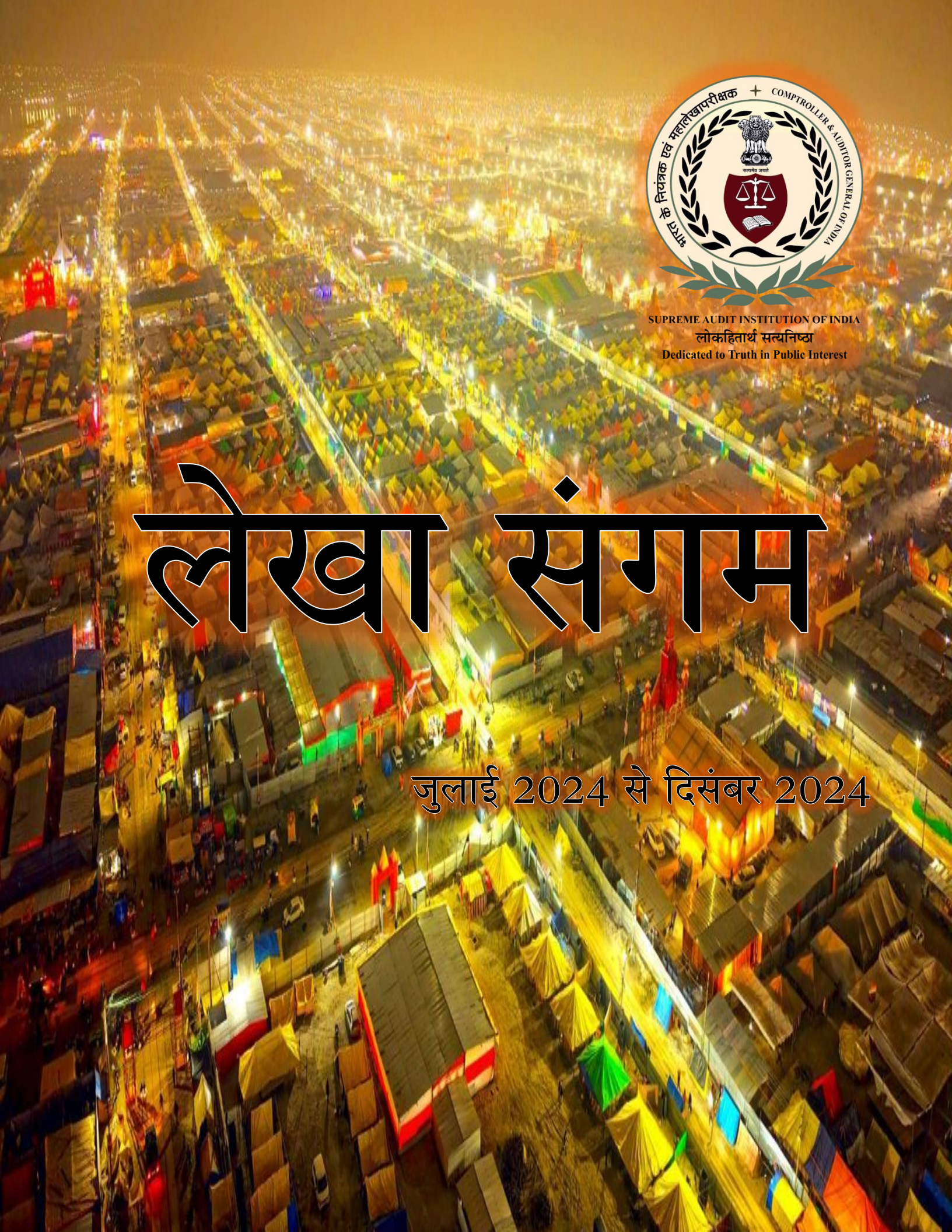

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखा संगम

जुलाई 2024 से दिसंबर 2024

हिन्दी पखवाड़ा 2024 समापन समारोह की स्मृतियाँ

केवल विभागीय वितरण हेतु

24वां अंक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

हिंदी पत्रिका

लेखा संगम

जुलाई 2024 से दिसंबर 2024

कार्यालय

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

अंतर्राष्ट्रीय सूचना पद्धति एवं लेखापरीक्षा केंद्र, नोयडा, उत्तर प्रदेश

हिन्दी पखवाड़ा 2024 समापन समारोह की स्मृतियाँ

लेखा संगम परिवार

संरक्षक

श्री अभिषेक सिंह
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

डॉ. सुरेंद्र कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

परामर्शदाता

श्री शैलेश कुमार अग्रवाल
वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम

श्री अभिषेक कुमार
उप महालेखाकार/प्रशासन
(लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय

संपादक

सुश्री साधना राय
सहायक निदेशक (राजभाषा)
(लेखा एवं हकदारी)-प्रथम

सह-संपादक

सुश्री शिप्रा सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)
(लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय

सहयोग

श्री उत्तम कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
लेखा –प्रथम

श्री प्रभात रंजन
कनिष्ठ अनुवादक
लेखा-द्वितीय

श्री प्रशांत कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
लेखा-द्वितीय

सुश्री कोमल श्रीवास्तव
लेखाकार
लेखा-प्रथम

मूल्य: निःशुल्क (राजभाषा हिंदी को समर्पित)

(नोट: लेखकीय विचारों से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है)

अनुक्रमणिका

गद्य संगम

क्रम संख्या	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	*महाकुंभ और प्रयागराज*	श्री यश मालवीय पर्यवेक्षक (सेवानिवृत्त)/लेखा-प्रथम	13
2.	*विचारों की अद्भुत शक्ति*	श्री राहुल सिंह वरिष्ठ लेखाकार/लेखा- प्रथम	18
3.	*अजनबी दोस्त*	श्री संजय कुमार लेखाकार/लेखा-द्वितीय	22
4.	*अगले कुछ सालों में बीमारियों का इलाज मंत्रों से होगा*	श्री सतीश राय वरिष्ठ लेखाकार/ लेखा-द्वितीय	26
5.	*मानव जीवन में भावनाओं की भूमिका*	श्री उत्कर्ष शुक्ला पुत्र-श्री दीप कुमार शुक्ला (पर्यवेक्षक)	29
6.	*गिरह*	डॉ. श्रीमति नमिता चंद्रा सहायक लेखा अधिकारी /लेखा-प्रथम	34
7.	*जैसलमर- स्वर्ण नगर का अविस्मरणीय सफर*	श्री जतिन फरवानी लेखाकार/लेखा- द्वितीय	40
8.	*कृत्रिम बुद्धिमत्ता: हमारे जीवन को बदलती एक अद्भुत तकनीक*	श्री राघव श्रीवास्तव लेखाकार/ लेखा-द्वितीय	48
9.	*भारत को सशक्त बनाने में सी.ए.जी की भूमिका*	श्री निखिल तोमर वरिष्ठ लेखा परीक्षक/ आई.सी.सा	51
10.	*जीवन का सबसे खूबसूरत सफर- स्पीति*	सुश्री कोमल श्रीवास्तव लेखाकार/लेखा-प्रथम	55

अनुक्रमणिका

पद्य संगम

क्रम संख्या	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	*प्रयागराज मे कुम्भ*	श्री राघवेंद्र सिंह वरिष्ठ लेखाधिकारी, लेखा प्रथम	63
2.	*मित्रता*	श्री नीरज भाटिया सहायक लेखा अधिकारी/लेखा-द्वितीय	66
3.	*विकसित भारत 2047*	सुश्री नाज़िया कादिर लेखाकार/लेखा- द्वितीय	68
4.	*अनंत की खोज*	श्री दीप कुमार शुक्ल पर्यवेक्षक/लेखा- द्वितीय	69
5.	*वन में कछुआ रहता था*	श्री तरुण सक्सेना सहायक लेखाधिकारी/ लेखा-प्रथम	70
6.	*मुझे घर बहुत याद आता है*	सुश्री ज्योति यादव कनिष्ठ अनुवादक/आई.सी.सा	72
7.	*स्त्री का संतुलन*	श्रीमती ऋतु धीमान सहायक प्रशासनिक अधिकारी/ आई.सी.सा	74
8.	*कृष्ण जन्म कथा*	श्री सुरेश चन्द्र जोशी लेखा अधिकारी(सेवा निवृत्त)/लेखा द्वितीय	77
9.	*स्वप्ना जो पूरे हो न सके*	श्री शशांक त्रिवेदी लेखाकार/लेखा-प्रथम	79
10.	*जब नाम बड़ा कर लेंगे*	श्री मनोज कुमार लेखाकार/ लेखा-द्वितीय	81
11.	*धन्य माता पिता*	श्री मनोज श्रीवास्तव वरिष्ठ लेखाकार, लेखा द्वितीय	82

संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 24वें अंक के प्रकाशन पर अत्यंत हर्ष हो रहा है। कार्यालय की यह पत्रिका कार्यलय के कार्मिकों को अपनी लेखन क्षमता विकसित एवं संवर्धित करने के लिए एक शानदार मंच प्रदान कर रही है। इस पत्रिका के माध्यम से एक ओर जहाँ राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं प्रसार हो रहा है वहीं दूसरी ओर ज्ञानार्जन एवं मनोरंजन भी हो रहा है। यह पत्रिका इस कार्यालय के कार्मिकों की भावनाओं एवं विचारों से अवगत कराने के साथ-साथ इस राज्य की संस्कृति का संवाहक भी बनी हुई है।

पत्रिका के इस अंक के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल तथा समस्त रचनाकारों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देता हूँ।

अभिषेक सिंह
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम ,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" का 24 वां अंक हमारे समक्ष है। कार्यालय में हिंदी के प्रति प्रेम व आदर पत्रिका के प्रत्येक रचनाकार की रचना एवं पत्रिका परिवार की निष्ठा में परिलक्षित होता है। रचनायें रचनाकार की सृजनात्मकता को भी बढ़ावा देती है। पत्रिका निश्चित रूप से राजभाषा हिंदी को नये शिखर पर ले जाने के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

आशा है कि लेखकों की लेखनी सभी पाठकगणों को ऐसे ही एक नई सोच व दिशा से अवगत कराती रहेगी। मैं रचनाकारों को राजभाषा हिन्दी के प्रति उनकी अतुलनीय निष्ठा के लिए और संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हृदय से धन्यवाद के साथ-साथ पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ देता हूँ।

डा. सुरेंद्र कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय,
उत्तर प्रदेश,प्रयागराज

संदेश

आप सभी का कार्यालय की हिंदी पत्रिका *"लेखा संगम"* के 24वें अंक में हार्दिक स्वागत है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय की गतिविधियों, उपलब्धियों और विचारों का संगम है, जो हमें एकजुट रखता है और समृद्धि व उन्नति की दिशा में प्रेरित करता है।

"लेखा संगम" न केवल हमारी सफलता की कहानियों को साझा करने का एक मंच है, बल्कि यह हमारे अनुभवों और विचारों के आदान-प्रदान के माध्यम से हमारी साझेदारी को और मजबूत बनाता है।

इस पत्रिका के संपादन और प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी सहयोगियों को मैं तहे दिल से धन्यवाद देती हूँ। आपके रचनात्मक प्रयासों और समर्पण से यह पत्रिका निरंतर नए आयाम छू रही है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि *"लेखा संगम"* का यह नवीनतम अंक सभी को सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करेगा और हमारी कार्यक्षमता को नई ऊँचाइयों तक ले जाने में सहायक सिद्ध होगा।

मैं आप सभी से आग्रह करती हूँ कि इस पत्रिका का स्वागत पूरे उत्साह और सकारात्मकता के साथ करें तथा अपने बहुमूल्य सुझाव एवं विचार हमारे साथ साझा करें।

पत्रिका के निरंतर विकास और स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(गीता मेनन)
महानिदेशक
अंतर्राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा लेखा परीक्षा केंद्र, नोएडा

संपादक की कलम से.....

"लेखा संगम" के 24वें अंक को आप पाठकों के समक्ष लोकार्पित करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा हिन्दी को संवर्धित करना हमारा संवैधानिक दायित्व है एवं पत्रिका लेखा संगम के माध्यम से अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने वाले प्रत्येक रचनाकर ने अपने दायित्व को निभाया है। जैसा कि नाम ही है 'लेखा संगम', इस पत्रिका में आपको सभी प्रकार की रचनाओं का संगम प्राप्त होगा। "लेखा संगम" के 24वें अंक के संबंध में आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

राजभाषा हिन्दी पत्रिका "लेखा संगम" के 24वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु लेखकों एवं संपादक मण्डल को हृदय के अंतस्तल से आभार। पत्रिका निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे।

जय हिन्द, जय हिन्दी।

साधना राय
संपादक

पाठकों के पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 47 दिनांक 17.10.2024

प्रति,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी / हिन्दी प्रकोष्ठ
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

विषय : कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के 23वें अंक की पावती बाबत ।
संदर्भ : आपके पत्र सं हि.अ. लेखा संगम (17)/23वां अंक /54827 दिनांक 04.10.2024

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "लेखा संगम" के 23वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर भगवान बुद्ध की अद्भुत खोज-विपश्यना, ब्रह्मरंध्र: एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण, स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी का महत्व, किसका दोष, मानव जीवन में खेलों का महत्व, न जरूरत हूँ न जरूरी हूँ, श्रेष्ठ समाज की परिकल्पना, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

17/10/24

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

सं.प्रलनिप(के)/हिंदीअनुभाग/14-02 I/771375/2024

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL), CHENNAI
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालै, चेन्नै 600 018
Lekha Pariksha Bhavan, 361, ANNA SALAI, CHENNAI – 600 018

सं मनिलेप(के) /हिंदी अनुभाग/14-02/2024-25/124 दिनांक : 21.10.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-प्रथम),
उत्तर प्रदेश,
प्रयागराज-211 001

विषय : हिंदी पत्रिका **"लेखासंगम"** " के 23वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका **"लेखासंगम"** " का 23वां अंक इस कार्यालय में मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ । धन्यवाद ।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं । सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक है विशेषतः श्री विजय कुमार कृत **"कथाकार"**, सुश्री डॉ. नमिता चंद्रा कृत **"हिमशिला"** श्री प्रशांत कुमार सिंह कृत **"यात्रा स्मृति-स्टैच्यु ऑफ यूनिटी"**, श्री अनुराग निषाद कृत **""श्री राम युग"** एवं श्रीमती ज्योति यादव कृत **"वर्किंग वुमन"** अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

1

File No. सं.प्रलनिप(के)/हिंदीअनुभाग/14-02 (Computer No. 246847)
Generated from eOffice by RAHUL SHAW, JHT2RAJ, JUNIOR HINDI TRANSLATOR, PDA (CENTRAL)-CHENNAI on 22/10/2024 02:55 pm

---

सं.लेप.II(हिंदीकक्ष)/पत्रविवि/2023-24 I/775578/2024

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम - 695 001

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2024-25 25-10-2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

विषय:- पत्रिका की पावती – बाबत्

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखा संगम" के 23वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, मनोरंजक एवं लाभप्रद हैं, विशेषकर सुश्री साधना राय द्वारा रचित लेख 'स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी का महत्व' तथा श्री शिवम यादव द्वारा रचित कविता 'गीत' अत्यंत सराहनीय हैं । पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाईयाँ ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति तथा उज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

दूरभाष / Telephone 0471 – 2330899 ई-मेल / e-mail : agauKerala2@cag.gov.in फैक्स / Fax – 0471-2332022
वेबसाइट / Website : https://cag.gov.in/ag2/kerala/en

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),मेघालय, शिलांग-793001
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG – 793 001
ई/मेल-E mail:agaemeghalaya@cag.gov.in

संख्या:हि.प्रकोष्ठ/3/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/676 दिनांक: 23.10.2024

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

विषय:- विभागीय राजभाषा पत्रिका - **'लेखा संगम'** के 23वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषय पर दिनांक 07.10.2024, 9:41:57 पूर्वाह्न को ई-मेल के माध्यम से आपके कार्यालय की विभागीय राजभाषा पत्रिका - **'लेखा संगम'** के 23वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक है।

पत्रिका मे प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएं ज्ञानवर्धक, प्रेरक एवं सराहनीय है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल, लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के समस्त लेख/रचनाएं प्रशंसनीय है, विशेष रूप से डॉ. नमिता चंद्रा द्वारा **"हिमशिला"**, श्री प्रशांत कुमार सिंह द्वारा **"यात्रा स्मृति - स्टेच्यु ऑफ यूनिटि"**, सुश्री राखी कुमारी द्वारा **"प्रकृति की गोद में एक अदभुत यात्रा"** एवं अनुराग निषाद द्वारा **"श्री राम युग"** रही है। सुश्री साधना राय का **"स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी का महत्व"**, श्री शशांक शेखर का **"ई-ऑफिस : एक डिजिटल वर्कप्लेस सोल्यूशन"**, श्री अंकुर अग्रवाल का **"झांसी : वीरभूमि"**, श्री सुरेशचन्द्र जोशी का **"कल्पना चावला"**, श्रीमती ज्योति यादव का **"वर्किंग वुमन"** आदि प्रेरक एवं प्रशंसनीय हैं ।

आपके कार्यालय की विभागीय राजभाषा पत्रिका - **'लेखा संगम'** के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

भारत सरकार/GOVT.OF INDIA
कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर- 751001
O/O THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, BHUBANESWAR-751001

सं-रा.भा.अ./प.प्रति./37/2024-25/227 दिनांक:23.10.2024

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय- महालेखाकार (ले. व हक.)-प्रथम
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

विषय:- विभागीय राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के 23वां अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली विभागीय राजभाषा पत्रिका "लेखा संगम" के 23वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र अत्यंत मनमोहक हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ भावपूर्ण, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से 'है जीवन परतंत्र अभी तक, फिर कैसी आजादी है', 'स्वीधीनता आंदोलन में हिंदी का महत्त्व', 'वर्किंग वुमन', 'ई-ऑफिस:एक डिजिटल वर्कप्लेस सोल्यूशन' आदि रचनाएं रोचक, सारगर्भित एवं प्रशंसनीय हैं। हिंदी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास निश्चित रूप से सराहनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,

मनोरंजन पाणिग्राही
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक- हि.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2024-25/I/773742/2024 दिनांक: 24-10-2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

विषय:- कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'लेखा संगम' के 23वें अंक की समीक्षा।

महोदय,
आपके कार्यालय से प्रकाशित "लेखा संगम" के 23वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक अद्वितीय है। श्री प्रत्यूष अवस्थी की "ब्रह्मरंध्र: एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण", सुश्री साधना राय की "स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी का महत्व", श्री विजय कुमार की "कथाकार", डॉ नमिता चंद्रा की "हिमशिला" एवं श्री अंकित निगम की "है जीवन परतंत्र अभी तक, फिर कैसी आजादी है" आदि रचनाएँ अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक व उत्कृष्ट हैं।
पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीया,

EKTA
(हिंदी अधिकारी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-360001
Office of the Principal Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-360001
फोन नं.Phone No: 0281-2441600-06, फैक्स नं.Fax No: 0281- 245623
Government of India

सं.हिंदी अनुभाग/पत्रिका समीक्षा/19/2024-25/जा.क्र - 112
दिनांक: 27-01-2025

सेवा में,
श्री जितेंद्र जी,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश,
प्रयागराज

विषय:- कार्यालयी पत्रिका "लेखा संगम" के 23 वें अंक की समीक्षा प्रेषण के संबंध में।

महोदय,
आपके कार्यालय की **पत्रिका "लेखा संगम" के 23 वें अंक की** की ई-प्रति की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, श्री यश मालवीय की रचना "साहित्यकार दंपति ममता कालिया और रवींद्र कालिया, श्री राम कृपाल की रचना "भगवान बुद्ध की अद्भुत खोज विपश्यना", श्री प्रत्यूश अवस्थी की रचना "ब्रम्हारंध्र एक आध्यात्मिक खोज", सुश्री साधना राय की रचना "स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी का महत्व", श्री शशांक शेखर की रचना "ई-ऑफिस एक डिजिटल वर्क प्लेस सॉल्यूशन", श्री विजय कुमार की रचना "कथाकार" डॉ.नमिता चंद्रा की रचना "हिमशिला", श्री राहुल सिंह की रचना "मानव जीवन में खेलों का महत्व:, श्री प्रशांत कुमार सिंह की रचना "यात्रा स्मृति-स्टेच्यू ऑफ यूनिटी", श्री सतीश राय की रचना "सर्दी-जुकाम हैं मनुष्य के सबसे बडे दुश्मन", श्री संजय कुमार की रचना "किसका दोष", श्री प्रभात रंजन की रचना "समाज में नैतिक पतन", श्री विश्वजीत श्रीवास्तव की रचना "न जरुरत है, न जरुरी है", श्री अंकित निगम की रचना "हैं जीवन परतंत्र अभी तक, फिर कैसी आजादी है", श्री सुरेश चंद्र जोशी की रचना "गीत कल्पना चावला", और श्री कृष्ण मुरारी गर्ग की रचना "मानव मूल्य हार गया", श्री निखिल तोमर की रचना "मैं, बड़ा बेटा, और श्री शिवम सिंह की रचना "लघु कविताएं" आदि रचनाएं ध्यानाकर्षित करती है।

पत्रिका के माध्यम से "क" क्षेत्र मे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही उत्तम है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर वृक्षों से घिरे मार्ग का बहुत ही सुंदर है, जो पत्रिका को आकर्षक बनाता है। अंतिम पृष्ठ भी चित्र सुंदर है। कार्यालयी चित्रों ने पत्रिका को और भी सुंदरता प्रदान की है।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ 'गिरनार' परिवार को पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,
27-01-2025
(हिन्दी अधिकारी)

SP
FE42809799454H

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
त्रिपुरा, कुंजवन, अगरतला- 799 006

संख्या: हिन्दी अनुभाग/ पत्रिका प्रतिक्रिया/2024-25/851 **दिनांक:** 19 Dec. 2024

सेवा में,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-प्रथम),
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश,
पिन - 211001

Hindi cell

विषय: पत्रिका की प्राप्ति पर प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषयांतर्गत उल्लेखनीय है कि आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह-पत्रिका '**(लेखा संगम)**' की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनायें अतीव ज्ञानवर्धनीय, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदैव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मण्डल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यदाद एवं बहुत-बहुत बधाई।

सादर, धन्यवाद !

भवदीय,
19/12/24
हिन्दी अधिकारी [हिन्दी अनुभाग]

71959

गद्य संगम

महाकुंभ और प्रयागराज

श्री यश मालवीय
पर्यवेक्षक(सेवानिवृत्त)/लेखा प्रथम

कुंभ मेला आहट देने लगा है।अमृत घट छलकने वाला है। दुल्हन की तरह सजने लगी है संगम नगरी। इन दिनों शहर सो नहीं रहा है,बस मेले के सपने सजा रहा है। ज़ोर शोर से कुंभ की तैयारियां चल रही हैं। सड़कें चौड़ी हो गई हैं,यह बात और है कि युद्ध स्तर पर पेड़ काट डाले गए हैं। हर विकास का उजियारा, अपने साथ विनाश का अंधियारा लेकर आता ही है। वातावरण में उत्सव की गंध बिखर रही है। गलियों सड़कों का कोलतार से सिंगार हो रहा है। गंगा पर पालटून पुल बांधे जा रहे हैं। धर्म ध्वजाएं लहरा रही हैं। आध्यात्मिकता से सराबोर है इलाहाबाद का चप्पा चप्पा। भजन कीर्तन के स्वर आसमान छू रहे हैं। हरसिंगार की सुगन्ध से भीगे हैं, अरैल से फाफामऊ तक के रास्ते। झूंसी, छिवकी, दारागंज इलाकों का भी कायाकल्प हो रहा है। दिन में कई कई बार तीर्थयात्रा पथ धोए जा रहे हैं।

प्रयागराज की दीवारें भी खिल उठी हैं,चित्र उकेरे जा रहे हैं उनपर। युवा कलाकार दिन उगते ही सड़क किनारे इकठ्ठे हो जाते हैं और कूंची और रंगों से शहर का अतीत एवं वर्तमान सजाया जाने लगता है, जिसमें आने वाले कुंभ के झिलमिलाते और जगमगाते भविष्य की शक्ल स्पष्ट देखी जा सकती है। ऋषियों मुनियों के चित्र देखकर कविवर सूर्यभानु गुप्त की एक चमकीली अभिव्यक्ति याद आ रही है,वो कहते हैं-

कंघियां टूटती हैं लफ़्ज़ों की
साधुओं की जटा है खामोशी।

यह मेला विश्व स्तर पर जन को जोड़ता रहा है। सारे संसार में कोई दूसरा ऐसा मेला नहीं लगता, जिसमें इतनी बड़ी जनभागीदारी होती हो। मेले के विशेष दिनों में इलाहाबाद की आबादी एक अच्छे खासे देश की आबादी के बराबर हो जाती है। आश्चर्य है कि इस मेले का अलग से कोई संयोजक या प्रायोजक नहीं होता लेकिन दूरस्थ स्थानों से बिन बुलाए मेहमानों से शहर पट जाता है। वस्तुतः इन्हें मां त्रिवेणी ही

टेर लेती है, आवाज़ देकर बुला लेती है। भक्तों का रेला नैनी से चलता है तो सीधा संगम में आकर सांस लेता है।

तंबुओं का शहर बसना जारी है। संत समागम शुरू हो गया है। एक विलक्षण पौराणिकता और मिथकीयता यहां सांस ले रही है। भारद्वाज मुनि का आश्रम टुकुर-टुकुर निहार रहा है और याद कर रहा है कि कैसे भगवान राम, लक्ष्मण और सीता के साथ यहां पधारे थे और केवट ने उनके पांव पखारे थे। हवाओं में महाकवि तुलसी की चौपाइयां तैर रही हैं। श्रृंगवेरपुर तक का मौसम सुहावना हो उठा है।

प्रयागराज गंगा यमुना के दोआब पर बसा शहर है। अगर शहर को ही एक शरीर मान लिया जाय तो गंगा और यमुना उसके शरीर पर यज्ञोपवीत सी ही लहराती हुई सी दिखती हैं । दुख तब होता है जब आज भी गंगा में नाले परनाले गिरते हुए दिख जाते हैं। आज का भगीरथ परेशान हो जाता है और सुधांशु उपाध्याय के शब्दों में कह उठता है-

इस युग के हम हुए भगीरथ
अपनी यही कहानी
आगे-आगे प्यास चल रही
पीछे-पीछे पानी।

ख़ैर, यह तो सिक्के का एक पहलू है। तीर्थराज प्रयाग तो प्रारम्भ ही से एक उत्सवजीवी शहर रहा है। वह पूरे मन प्राण से उत्सव की अगवानी के लिए तैयार हो रहा है। अपने फेफड़ों में भर रहा है मंत्र और प्रार्थनाएं। प्रतिवर्ष माघमेला और छः और बारह वर्ष के अंतराल पर लगने वाले कुंभ और महाकुंभ मेले का यह बरसों बरस से साक्षी रहा है। हर बार मेले में यह कुछ और नया हो जाता है। यह जितना प्राचीन शहर है, उतनी ही नई हैं इसकी भंगिमाएं। हर साल यह बुज़ुर्ग शहर तरुणाई को मात देता है। कछार में मीलों मील सरसों के फूलों के मांगलिक आमंत्रण छप गए हैं । महीने भर के कल्पवास का मुहूर्त भी तय हो चला है । आधुनिक पीढ़ी तो होटलों में भी कल्पवास करती है। होटलों में अभी से जगह फुल हो रही है । फ्लाइट के दाम गगनचुंबी हैं, ट्रेनों में सीट और बर्थ के लिए मारामारी पराकाष्ठा पर है।

अभी कल ही कुंभ क्षेत्र की परिक्रमा करके लौटा हूं। नाव पर मल्लाह की नन्हीं पोती ने अपने बाबा से एक सवाल कर दिया था, बाबा ये बताओ गंगा मां अलग दिखती हैं, यमुना मां अलग दिखती हैं, मां सरस्वती क्यों नहीं दिखाई देतीं । सवाल सुनकर वह बूढ़ा मल्लाह वत्सल हो उठा था और उसे

अपने पास खींचकर उसकी चुटिया खोल दी थी और बोला था- बिटिया जब तुम चोटी गूंधती हो तो तीन लरें होती हैं, पर जब चोटी बनकर तैयार होती है तो दो ही लरें दिखाई देती हैं, तीसरी कहीं इन्हीं दो लरों के बीच छुपी रह जाती है। इसी तरह से गंगा और यमुना के बीच सरस्वती भी कहीं छुपी रह जाती है। बाबा का सहज समाधान पाकर बिटिया का चेहरा फूल सा खिल उठा था । वास्तव में गंगा यमुना के शहर में सरस्वती ही संस्कृति की तरह उजागर हुई है। गंगाजमुनी तहज़ीब और साझा संस्कृति की विरासत का मुहावरा भी यहीं से उठाया गया है। त्रिवेणी तट पर महाप्राण निराला, कविवर सुमित्रानंदन पंत और महीयसी महादेवी की त्रिवेणी को भला कौन भूल सकता है। जनाब अकबर इलाहाबादी और फ़िराक गोरखपुरी की शायरी भी यहीं परवान चढ़ी। शाम गोधूलि के बाद, उतरते हुए अंधेरे में जब तंबुओं के शहर की बत्तियां जलती हैं तो रोज़बरोज़ सैकड़ों दीपावलियां यहां साकार हो उठती हैं।

हर बार की तरह इस बार भी शहर एक बड़े मेले के लिए तैयार हो रहा है । इस तैयारी की भी एक लय है, एक छंद है और एक सजता हुआ सा संगीत है। विश्व बंधुत्व की ऐसी ज़िन्दा मिसाल है यह मेला कि संगम नगरी का कण- कण प्राणवंत हो उठता है । कश्मीर से कन्याकुमारी तक का एक हो जाना देखना हो तो इस मेले में ज़रूर आइए, भारतीय संस्कृति की अंतराष्ट्रीयता आपको अभिभूत कर देगी। संगम समन्वय का ही संदेश देता है। कुंभ मेले का भी यही केंद्रीय भाव है, तभी तो एक कवि कहता है-

दिया नदी में तैरता, लहर लहर कचनार ।
ना ऐसा मेला कहीं, ना ऐसा त्योहार ।।

दिशा-दिशा से साइबेरियाई पंछी जुड़ रहे हैं, रामदाना और लइया चुग रहे हैं। धूप, दीप, नैवेद्य, आरती की खुशबू से नहाया है परिवेश और पर्यावरण। रोली, अक्षत, दूब सज रहा है मंगल कलश पर। चंदन चर्चित हैं हमारे भाल। भीतर का कबीर पंडितों पुरोहितों और दुकानदारियों को खुलेआम चुनौती दे रहा है-

पंडे डरे कबीर से, उठी धर्म की हाट
बिक जाने से बच गया, गंगा जी का घाट।

संगम तीरे पण्डित जसराज के स्वर में भैरवी गूंज रही है। आसमान सिलेटी हो रहा है। समानांतर रूप से भट्टी में आग दहकाई जा रही, जलेबी छनने की तैयारी भी शुरू हो गई है। जलेबी इलाहाबाद का राष्ट्रीय खाद्य है। एक नया कुंभ मेला करवट लेने जा रहा है। जगन्नाथ दास रत्नाकर के गंगावतरण के छंद

आकार ले रहे हैं और कवि उमाकांत मालवीय के गंगा गीत का एक चरण बरबस होठों पर लरजने लगा है-

गंगोत्री में पलना झूले,आगे चले बिकइयां
भागीरथी घुटुरुवन डोले,शैल शिखर की छइयां
भूखा कहीं देवव्रत टेरे, दूध भरी है छाती
दौड़ पड़ी ममता की मारी, तजकर संग संगाती
गंगा नित्य रंभाती बढ़ती जैसे कपिला गइया
सारा देश क्षुधातुर बेटा,वत्सल गंगा मइया।

व्यवस्था, अव्यवस्थाओं से लड़ने के लिए कमर कस रही है। वी. आई. पी घाट का रंग और ढंग अभी से वी. वी. आई. पी है। आम आदमी तो शायद इस बार भी दूर ही से संतोष करेगा, संगम तक पहुंच पाना उसके लिए टेढ़ी खीर ही रहेगा। फिर भी गुलब्बो की दुलहिन कुंभ मेला क्षेत्र में अपने साजो सामान के साथ पहुंच रही हैं, जिन्हें देखकर आज भी कवि कैलाश जी बनारसी और भोजपुरी रंग में जैसे लिख रहे हैं-

गुलब्बो की दुलहिन चलें धीरे धीरे
भरल नाव जैसे नदी तीरे तीरे
बचावेलीं ठोकर, बचावेलीं धक्का
मनै मन छुहारा, मनै मन मुनक्का

या फिर

मुंह पर उजली धूप
पीठ पर काली बदली है
रामधनी की दुलहिन
नदी नहाकर निकली है।

कुंभ मेला लग रहा है, और लग रहा है, सज रहा है, और सज रहा है। सारा शहर अविकल प्रतीक्षा में है । इंतज़ार की अगरबत्ती जल रही है, सबके मन में एक आस पल रही है। कुंभ मेला हमें

बहुत कुछ देकर जाता है। हम कितने भाग्यवान हैं कि हम वहीं रहते हैं, जहां यह मेला जुड़ता है। यह पर्व हमें जीने की नई ऊर्जा से लैस करता है। काश हमें वही प्रयाग एक बार फिर से मिल पाता, जिसे हम अब तक जीते आए हैं और किसी कवि को यह न कहना पड़ता-

संतों में हम प्रयाग खोजते रहे
धुआं धुआं वही आग खोजते रहे।

धुआं भी है, आग भी, संत भी हैं और प्रयाग भी, बस हमें उसी कुंभ मेले की राह देखनी है, जो हमें एक बार फिर से जोड़ने आ रहा है। आजकल कुंभ से पहले इस कुंभ नगरी का बाँकपन देखते ही बन रहा है, रात में शहर में निकलिए तो लगता है सितारे ही ज़मीं पर उतर आए हैं और हज़ार-हज़ार आंखों से कुंभ मेले का इंतज़ार कर रहे हैं। मशहूर शायर मुनव्वर राना ने कहा भी है-

तमाम जिस्म को आँखें बनाके राह तको
तमाम खेल मोहब्बत में इंतज़ार का है।

विचारों की शक्ति

श्री राहुल सिंह
वरिष्ठ लेखाकार/लेखा प्रथम

"हम जैसा सोचते हैं वैसे ही बन जाते है" अर्थात हम अपने भीतर जिन विचारों का मनन करते रहते हैं वही हमारे व्यक्तित्व की आधारशिला होती हैं। कोई मनुष्य जब भी कोई कार्य करता है तो सर्वप्रथम विचार के माध्यम से उसकी रूप-रेखा मन में बनाता है । हम इस संसार में जितने भी कार्य दृश्य रूप में होते हुए देखते हैं उन सभी के पीछे अदृश्यरूपी विचारों का ही योगदान होता है जो कि सर्वप्रथम मनुष्य के मस्तिष्क में जन्म लेता है । अर्थात यदि कार्य को एक पेड़ के रूप में परिभाषित करें तो विचार को उस पेड़ के बीज के रूप में देखा और समझा जा सकता है। विचारों की शक्ति एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गहरे प्रभाव वाली शक्ति है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन की दिशा को बदलने में सक्षम है। यह शक्ति हमारे दिमाग में उत्पन्न होने वाले उन मानसिक चित्रों, विचारों और कल्पनाओं से उत्पन्न होती है, जो हम दिन-प्रतिदिन अनुभव करते हैं। विचारों का हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, और इन्हें सही दिशा में प्रयोग करने से हम अपने जीवन को संवार सकते हैं। विचारों की शक्ति बहुत ही सूक्ष्म और अदृश्य होती है, लेकिन इसका प्रभाव वास्तविक होता है। प्रत्येक विचार हमारे मानसिक और शारीरिक स्थिति को प्रभावित करता है।

हमारे मस्तिष्क में दिन भर में हजारों विचार जन्म लेते हैं, यह मस्तिष्क की स्वाभाविक प्रक्रिया है । चेतन अवस्था में विचारों का आवागमन लगातार हमारे मस्तिष्क में चलता रहता है । विचार, मनुष्य की मानसिक प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा हैं। ये विचार हमारे दृष्टिकोण, आस्थाओं, और दृष्टि भिन्नताओं को प्रभावित करते हैं, और हमारी दुनिया को आकार देते हैं। हमारे विचारों का हमारे जीवन पर गहरा असर पड़ता है। वे हमारी भावनाओं, कार्यों, और निर्णयों को नियंत्रित करते हैं । इन विचारों में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार के विचार होते हैं । सकारात्मक विचार न केवल हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं, बल्कि वे हमारे आत्मसंतोष, सफलता और खुशी का भी कारण बनते हैं। वहीं, नकारात्मक विचारों के परिणामस्वरूप निराशा, मानसिक तनाव और असफलता का सामना करना पड़ता है। एक व्यक्ति जो खुद को हमेशा असफल मानता है, वह अपने काम में पूरी मेहनत और उत्साह से नहीं जुटता।

वहीं, एक व्यक्ति जो खुद को सफल मानता है, वह न केवल अपने लक्ष्य को हासिल करता है, बल्कि अपने आसपास के लोगों को भी प्रेरित करता है।

हमारे विचारों का हमारे स्वास्थ्य, रिश्तों, कामकाजी जीवन, और सामाजिक स्थिति पर गहरा असर पड़ता है। जब हम सकारात्मक विचारों को अपने जीवन में अपनाते हैं, तो हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। यह आत्म-विश्वास और प्रेरणा को जन्म देता है। इसके विपरीत, नकारात्मक विचार हमें हमारी शक्तियों और क्षमताओं से वंचित करते हैं। मानसिकता का सकारात्मक होना सफलता की कुंजी है। विचारों की शक्ति का सबसे प्रभावी उपयोग सफलता प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। यदि हम अपने विचारों को सकारात्मक दिशा में मोड़ते हैं, तो हम किसी भी कठिनाई का सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो जाते हैं। सफलता का रहस्य यही है कि हम अपने विचारों को नियंत्रित कर उन्हें सकारात्मक दिशा में मोड़ें। सफलता के मार्ग में आने वाली बाधाओं और विफलताओं को भी एक सीख के रूप में देखना चाहिए। जब हम सोचते हैं कि हम असफल नहीं हो सकते, तो हम हर चुनौती का सामना करते हुए सफलता की ओर बढ़ते हैं। आइये विचारों के दोनों पहलुओं सकारात्मक और नकारात्मक विचारों को एक –एक कर समझने का प्रयास करते हैं।

सकारात्मक विचार

सकारात्मक विचार वह मानसिकता है जिसमें व्यक्ति जीवन की हर स्थिति को आशावादी दृष्टिकोण से देखता है। ऐसे व्यक्ति समस्याओं को एक चुनौती के रूप में लेते हैं, जिनसे वे कुछ नया सीख सकते हैं। वे अपने आत्मविश्वास को बनाए रखते हैं और कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं। सकारात्मक सोच हमें जीवन के प्रति एक उत्साही और प्रेरणादायक दृष्टिकोण देती है, जिससे हम अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए निरंतर मेहनत करते हैं।सकारात्मक विचार रखने से हमारी आत्मशक्ति और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। जब हम खुद पर विश्वास करते हैं, तो हम किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरित होते हैं। सकारात्मक सोच हमें किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। इस संसार में जितने भी असाधारण कार्य हुए है उनके पीछे सकारात्मक सोच की ही शक्ति कार्य करती है । सकारात्मक विचारों से हम निरंतर प्रयास करते रहते हैं और कभी हार नहीं मानते। सकारात्मक सोच से मानसिक शांति मिलती है, जो हमें मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद से बचाती है। ऐसा व्यक्ति जीवन के प्रति खुश रहता है और उसका मनोबल ऊंचा होता है। सकारात्मक सोच से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है

और शरीर को ताजगी प्रदान करता है। एक व्यक्ति जो सकारात्मक सोचता है, वह अपने आसपास के लोगों को भी प्रेरित करता है। इस प्रकार, सकारात्मक विचार समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में मदद करते हैं। सकारात्मक विचारों के साथ हम किसी भी समस्या का समाधान ढूंढने में सक्षम होते हैं। हम यह मानते हैं कि हर समस्या का समाधान होता है और उसे हल करने के लिए हमें प्रयास करना चाहिए। नकारात्मक विचारों के विपरीत, सकारात्मक सोच हमें समस्याओं से घबराए बिना उन्हें सुलझाने की प्रेरणा देती है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में आई समस्याएं केवल सीखने और बढ़ने का अवसर लगती हैं, और वे उन्हें अवसरों के रूप में स्वीकार करते हैं।

नकारात्मक विचार

नकारात्मक विचार वे विचार होते हैं, जो निराशा, संकोच, और डर का कारण बनते हैं। ये विचार किसी व्यक्ति को अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने से रोकते हैं और उसे मानसिक तनाव, चिंता और डर के घेरे में डालते हैं। नकारात्मक विचारों के प्रभाव से जीवन की सुंदरता फीकी पड़ जाती है, और व्यक्ति जीवन में असफलता और निराशा का अनुभव करता है।नकारात्मक विचारों से व्यक्ति के दिमाग में निरंतर चिंता और भय का माहौल बनता है। इससे मानसिक तनाव और अवसाद उत्पन्न हो सकता है। नकारात्मक विचार व्यक्ति के आत्मविश्वास को कमजोर करते हैं। ऐसे व्यक्ति को लगता है कि वह किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक नहीं कर सकता, जिससे वह हर कार्य में असफल हो जाता है।

मानसिक तनाव और चिंता के कारण शरीर पर भी नकारात्मक असर पड़ता है। यह हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, और अन्य शारीरिक समस्याओं का कारण बन सकता है। नकारात्मक विचारों से व्यक्ति का दृष्टिकोण हमेशा आलोचनात्मक होता है, जो रिश्तों में तनाव पैदा करता है। व्यक्ति दूसरों की अच्छाई को नहीं देखता और उन्हें नकारात्मक तरीके से सोचता है। नकारात्मक विचारों के कारण व्यक्ति निरंतर असफलताओं का सामना करता है। वह हमेशा नकारात्मक परिणामों की उम्मीद करता है और कभी प्रयास नहीं करता, जिससे उसकी क्षमताओं का सही उपयोग नहीं हो पाता।

निष्कर्ष

विचारों की शक्ति का प्रभाव किसी भी व्यक्ति के जीवन पर अत्यधिक होता है। सकारात्मक विचारों के माध्यम से हम न केवल अपने जीवन को संवार सकते हैं, बल्कि दूसरों की मदद भी कर सकते हैं। नकारात्मक विचारों को त्याग कर सकारात्मकता की ओर बढ़ने से जीवन में सुख, शांति और सफलता प्राप्त

की जा सकती है। यह हमें जीवन के किसी भी क्षेत्र में जीत दिला सकता है, क्योंकि विचारों का प्रभाव हमारी कार्यशक्ति, मानसिक स्थिति और जीवन की दिशा को निर्धारित करता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपने विचारों को सही दिशा में नियंत्रित करें, ताकि हम जीवन में सफलता और खुशी पा सकें। सकारात्मक विचारों का महत्त्व किसी भी व्यक्ति के जीवन में अत्यधिक होता है। यह न केवल हमारे मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि हमारे शारीरिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, और सामाजिक संबंधों पर भी गहरा असर डालता है। सकारात्मक सोच से हम जीवन को बेहतर तरीके से जी सकते हैं, अपनी क्षमताओं का सही उपयोग कर सकते हैं, और सफलता की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी सोच को सकारात्मक रखें, क्योंकि हमारी सोच ही हमारी जिंदगी की दिशा तय करती है। सकारात्मक विचारों को अपने जीवन में अपनाकर हम अपने जीवन को समृद्ध और खुशहाल बना सकते हैं।

मनुष्य को यदि जीवन में सफल होना है तो उसे अपने विचारों को सशक्त बनाना होगा,सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना होगा तभी जीवन आनन्दमय बनेगा। सकारात्मक सोच के परिणाम सदैव सुखद और प्रीतिकर होते हैं। बेहतर कार्य हम अच्छे विचारों से ही कर पाते हैं। विश्व बंधुत्व, एकता तथा सभी प्राणियों के प्रति करुणा की भावना का विकास भी इसी दृष्टिकोण से संभव है। वास्तव में विचार मनुष्य के लिए प्रेरक होते हैं। इनकी सहायता से ही हम जीवन में आने वाली समस्यायों का समाधान पाते हैं। अच्छे विचार शरीर और मन दोनों को सशक्त बनाते हैं। अतः सरल बनें और सकारात्मक सोचें।

अजनबी दोस्त

संजय कुमार
लेखाकार/लेखा द्वितीय

वो ट्रेन के रिज़र्वेशन के डिब्बे मे बाथरूम के तरफ वाली सीट पर बैठी थी। उसके चेहरे से पता चल रहा था कि थोड़ी सी घबराहट सी है कि कहीं टीटीई (टिकट निरीक्षक) ने आकर पकड़ लिया तो वह बार-बार पीछे पलट कर टीटीई के आने का इंतजार करती रही। शायद सोच रही होगी कि पैसे तो नहीं है, शायद अनुरोध करने पर निपटारा हो जाए। देखकर तो आदित्य को यही लग रहा था कि शायद भीड़ के वजह से ट्रेन के जनरल डिब्बे मे चढ़ नहीं पायी, इसलिए रिज़र्वेशन के डिब्बे मे आकर बैठ गयी। महिला होकर भी समान के नाम पर सिर्फ एक छोटा सा थैला दिख रहा था उसके हाथ में। आदित्य बार-बार उसको देखते रहता और कोशिश करता रहा कि शायद चेहरा दिख पाये लेकिन उस रिज़र्वेशन डिब्बे मे वेटिंग लिस्ट वाले भी चढ़ गए थे तो वह स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे पा रही थी। बार-बार प्रयास करने के बाद भी आदित्य उसका चेहरा देखने में असफल ही रहा।

थोड़ी देर बाद वो भी खिड़की पर हाथ टिकाकर सो गयी। आदित्य भी वापस अपनी पत्रिका पढ़ने मे लग गया। लगभग एक घंटे बाद मुगलसराय (दीन दयाल उपाध्याय) स्टेशन पर टीटीई आया और उसे ज़ोर से हिलाकर जगाया और टिकट के बारे मे पूछा.....डरते-डरते वो बोली,"अंकल प्रयागराज तक जाना है" टीटीई बोला टिकट दिखाओ वो बोली सॉरी अंकल टिकट जनरल का है, लेकिन भीड़ के कारण चढ़ नहीं पायी इसलिए इसमें आकर बैठ गयी। नवम्बर के अंतिम दिनों में बिहार और उत्तर प्रदेश में दिवाली और छठ पूजा के बाद ट्रेन में बहुत भीड़ रहती है इसलिए भीड़ को देखते हुए लड़की होने के नाते रिज़र्वेशन के डिब्बे मे चढ़ गयी।

टी.टी.ई बोला कि आपको पेनाल्टी के रुप में 250/- रुपए लगेंगे। सॉरी अंकल मेरे पास तो सिर्फ 100/- रुपया है इतना कहते हुए वो रोने लगी। रोते हुए वो बोली कि अगर मुझे यहाँ बैठने से आपको दिक्कत है तो मैं मिर्जापुर में रिज़र्वेशन डिब्बे से उतरकर जनरल डिब्बे में चली जाऊँगी। कुछ परेशानी आ गयी थी जिसके कारण जल्दीबाजी में घर से निकल गयी और ज्यादा पैसा रखना भूल गयी। बोलते-बोलते उसका गला रुक गया। टीटीई आखिरकार 100/- रुपया लेकर चला गया। आदित्य एकटक नजरों से ये

बातचीत सुन और देख रहा था। टीटीई के जाने के बाद उस लड़की के चेहरे पर उदासीनता और चिंता के भाव साफ दिखाई दे रहे थे। झट से आदित्य ने अपने बैग से पेन और कॉपी निकाल के एक पन्ना पर लिखा कि "किसी अजनबी हमउम्र लड़के का इस तरह तुम्हें 500/- रुपया का नोट भेजना अजीब भी होगा और शायद तुम्हारी नजर में गलत भी हो सकता है, लेकिन तुम्हें इस तरह परेशान देखकर मुझे बेचैनी हो रही है। इसलिए ये 500/- रुपया भेज रहा हुँ। तुम्हें कोई एहसान न लगे, इसलिए अपना पता भी लिख रहा हुँ। बाद में सही लगे तो मेरे पते पर वापस भेज सकती हो। वैसे मैं नहीं चाहता हूँ कि तुम ये पैसे भेजो।

तुम्हारा अजनबी दोस्त.....

आदित्य ने एक चाय वाले के हाथों उसे वो नोट और पत्र देने को कहा और चाय वाले को मना किया कि उसे न बताए कि मैंने वो नोट भेजा है। नोट मिलते ही उसने दो तीन बार पीछे मुड़कर देखा कि उसकी तरफ देखता हुआ कोई नजर आए तो पता लग जाएगा कि किसने नोट भेजा है। लेकिन आदित्य तो नोट भेजने के बाद ही मुँह पर चादर डालकर छुप गया। थोड़ी देर बाद आदित्य चादर का कोना हटाकर देखा तो उसके चेहरे पर मुस्कुराहट महसूस किया। लगा जैसे कि कई सालों से इसे एक मुस्कुराहट का इंतजार था। उसकी आँखों की चमक ने आदित्य का दिल उसके हाथों में जाकर थमा दिया। फिर चादर का कोना हटा-हटा कर थोड़ी देर में उसे देखकर जैसे मानो सांस ले रहा था। पता ही नहीं चला कि कब आदित्य कि आँख लग गयी। जब आँख खुली तो ट्रेन प्रयागराज के स्टेशन पर पहुँच चुकी थी। आदित्य बेचैन होकर उसके सीट की तरफ देखने लगा लेकिन वो वहाँ नहीं थी। उसके सीट पर एक छोटा सी पर्ची रखी हुई थी। आदित्य उसे झट से उठा लिया और उस पर लिखे हुए शब्दों को पढ़ने लगा। *"थैंक यू मेरे अजनबी दोस्त, आपका ये एहसान मै जिंदगी भर नहीं भूलूँगी। दरअसल मेरी दादी माँ का देहांत हो गया था इसलिए आनन-फानन में घर जा रही हूँ। आज आपके पैसे से अपनी दादी माँ के अंतिम दर्शन कर पाऊँगी। आज से मैं आपकी कर्जदार हुँ, जल्द ही आपके पैसे लौटा दूँगी, "आपकी अजनबी दोस्त....."*

आदित्य मन ही मन मुस्कुराया और उस दिन से उसकी आंखे और मुस्कुराहट मानो आदित्य के जीने की वजह बन गयी हों। आदित्य हर रोज अपने डाकिया से पूछता था कि कोई अजनबी नाम से पत्र आया कि नहीं?

आदित्य ने अपने दोस्तों से ये बात बताई तो उसके दोस्तों ने उसके मजे लेना शुरू कर दिया। उसके दोस्त बोलने लगे कि भाई आजकल के जमाने में इस तरह के प्यार और अटैचमेंट को लोग दरकिनार कर देते

हैं। 2024 में ये सब बात आम बात है इसलिए बढ़िया है कि इस मोह माया से दूर होकर अपनी जिंदगी जीना शुरू करो। आजकल की लड़कियों के लिए ये सब एक नॉर्मल प्रक्रिया है। आदित्य इन सबके बातों को हल्के में लेकर खतम कर देता। आदित्य को ये विश्वास था कि भले ही जमाना आर्टिफ़िश्यल इंटेलिजेंस का हो, लेकिन उसकी आंखो मे उसका चेहरा और मुस्कुराहट मानो बार-बार ये कह रही हो कि मैं तुम्हारे सामने हूँ। धीरे-धीरे समय बीतता गया लेकिन कोई पत्र या चिट्ठी कहीं से भी नहीं आया। अब आदित्य मन ही मन अपने इमोशन को कोस रहा था और उस पल को भूलने के कोशिश करने लगा।

लगभग एक साल बाद डाकिया ने एक चिट्ठी दिया और बोला कि किसी अजनबी के नाम से चिट्ठी आई है। आदित्य ने चिट्ठी खोली तो लिखा था "आपका कर्ज अदा करना चाहती हुँ लेकिन खत के जरिये नहीं आपसे मिलकर। आप चाहे तो मुझे मेरे दिये मोबाइल पर कॉल कर सकते है। लेकिन मै चाहती हुँ कि आप मेरे से पहले भेंट करे। हमलोग 25 दिसम्बर को सिविल लाइन में कंपनी गार्डेन में गेट नंबर 1 पर मिलेंगे।"आपकी अजनबी दोस्त.....

आदित्य मन ही मन मुस्कुराया और 25 दिसम्बर का इंतजार करने लगा। 25 दिसम्बर को लगभग 8 बजे आदित्य के एक दोस्त ने उसके फोन पर बताया कि भाई 11 बजे जाना ताकि मालूम तो चले कि भाभी आपसे प्यार करती है। देखते है कि एक साल का लंबे इंतजार का फल कैसा होता है? आदित्य ने उसकी बात मन ली और लगभग अपने कमरे अशोक नगर से दस बजे निकला और क्रिसमस पर्व के कारण पूरे शहर मे भरी भीड़ लगी हुई थी। सड़क पर पूरी तरह जाम थी और ऊपर से 2024 का ठंड ने पिछले 30 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया था। आदित्य तेजी से बाइक चलाते हुए कंपनी बाग के तरफ जा रहा था तभी अचानक से एक कार के गलत साइड जाने से आदित्य ने अपनी बाइक रोक दी और तबतक दूसरे कार ने धुन्ध की वजह से दिखाई न देने के कारण आदित्य को टक्कर मार दी। आदित्य का सीरियस एक्सिडेंट हुआ जिसके कारण वो कोमा मे चला गया। उसे प्रयागराज से दिल्ली स्थित एम्स मे ले जाया गया। एक साल तक उसके स्वास्थ्य मे कोई सुधार नहीं आया। वह कभी कभी अपने चेहरा सीसे मे देखकर डर जाता और अपने से ही सवाल करने लग जाता। कभी कभी वह रात को छत पर दौड़ने लगता। उसके माता पिता के लिए वह एक जिंदा लाश सा बन गया था। वह कभी कभी तो अपने माता और पिता जी को पहचानने से इंकार कर देता।

कुछ दिन बाद आदित्य का एक दोस्त महेश उससे मिलने आया तो आदित्य ने उससे बिना बोले एक मोबाइल नंबर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगा। अब शायद वो पुरानी स्मृति मे आने लगा और अजनबी दोस्त बोलने लगा। उसके दोस्त ने वो नंबर डायल किया और बोला "अजनबी बोल रहा हूँ"

उधर से आवाज आयी कि मेरी शादी हो चुकी है, इतना कहकर वो रोने लगी और बोलने लगी कि 25 दिसम्बर को तुम क्यो नहीं आए? हमलोग दूसरे दिन मिल लेते। मेरा फोन नंबर तो आपके पास था कम से कम एक फोन तो कर देते। एक चिट्ठी तो लिख देते??

उसके फोन पर लगातार प्रश्नों को सुनकर उसका दोस्त कैसे कहता कि आदित्य का दोस्त बोल रहा हुँ और उसका 25 दिसम्बर को ही एक सीरियस एक्सिडेंट हो गया था और उसके बाद वो कोमा मे चला गया था। कैसे कहे कि आज ही उसको आपका मोबाइल नंबर याद आया और मैंने फोन किया। क्या आप ये बर्दास्त करोगी ?

आदित्य कैसे कहे -

"वो दर्द को पास बैठाकर ही सोये, जो तुझे लगता बारिश है वो आदित्य ही रोये
खुशियों से वो मिलना भूल गया, तुमसे अब वो बहुत दूर चला गया।"

नोट:- इस कहानी के नायक और नायिका का नाम काल्पनिक है, अगर इस कहानी और नाम से कोई विचार/नाम मेल खाता है तो इसे महज एक संयोग समझा जाए।

अगले कुछ वर्षों में बीमारियों का इलाज सात्विक मंत्रों से भी होगा

सतीश राय
सहायक पर्यवेक्षक, लेखा द्वितीय

मौसम बदलाव के समय लोग ज्यादा बीमार होते हैं। तापमान के बढ़ने या गिरने से सांस के रोगियों की बीमारियाँ बढ़ जाती हैं। यह बीमारी ठंड के मौसम में ज्यादा होती है, सर्दियों में अपने जीवन शैली में परिवर्तन कर शरीर को कड़ाके की ठंड से जूझने के लिए तैयार करें ताकि मौसमी बीमारियों से बचाव हो। खान-पान में बदलाव करें, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करें, शरीर को गर्म रखने का उपाय करें। जैसे-जैसे ठंड बढ़ती है, शरीर को ज्यादा ऊर्जा की जरूरत पड़ती है। सर्दियों में ठंड से बचने और ऊर्जा प्राप्त करने का सबसे सरल उपाय है जमकर भोजन करना। सर्दी से बचने के लिए खान-पान और जीवन शैली में कुछ बदलाव जरूरी है इसमें गर्मी देने वाले आहार जैसे अदरक, लहसुन, जायफल, हींग, काली मिर्च, गिलोय, अश्वगंधा, लौंग, दूध, घी, शहद, गुड़, तिल, ड्राई फ्रूट, मौसमी सब्जियां, मौसमी फल, आदि को किसी भी रूप में अपने भोजन में जरुर शामिल करें।

सेहत सबसे बड़ी संपत्ति होती है, यदि सेहत अच्छी ना हो तो दुनियां का कोई भी सुख, संपत्ति या वैभव व्यक्ति को असली खुशी नहीं दे सकता। गंभीर बीमारी के अलावा भी बहुत सारे लोग अक्सर छोटी-छोटी बीमारियों से परेशान रहते हैं, इसके कई कारण हैं।

सिर्फ टॉनिक, विटामिन की गोली और पौष्टिक आहार खाने से शरीर बलशाली होता तो संपन्न लोग बीमार ही नहीं पड़ते। संसार में एक भी धनवान व्यक्ति दुर्बल नहीं दिखाई पड़ता, वह बीमार भी नहीं पड़ता, इसी प्रकार यदि औषधि उपचार से रोग जड़ से ठीक होता तो कम से कम चिकित्सा व्यवसाई और औषधि निर्माता तो कभी भी बीमार नहीं होते। लेकिन ऐसा नहीं है, चिकित्सकों के घर में बीमारियां सामान्य लोगों की तुलना में अधिक हैं।

जब शरीर में रोगों की उत्पत्ति हो तो प्रारंभिक स्टेज में ही नेचुरल तरीके से बीमारियों को ठीक करने का उपाय करना चाहिए। प्राकृतिक उपचार का उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रंथों में वर्णित आयुर्वेद के

साथ-साथ सूर्य चिकित्सा, जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा, अग्नि चिकित्सा, मंत्र चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, स्पर्श चिकित्सा आदि का भी उल्लेख मिलता है। व्यक्ति को स्वस्थ रखने में स्पर्श चिकित्सा और उसके मंत्र रामबाण की तरह कार्य करते हैं। हमारे वेदों में शब्द को ब्रह्म कहा गया है। शब्द से बने मंत्रों में असीम शक्ति होती है जो रोगों का इलाज करने में सक्षम है। आगे आने वाले समय में आधुनिक विज्ञान भी इसे स्वीकार करने लगेगा। यूएसए समेत विश्व के आधा दर्जन विकसित देशों में मंत्र चिकित्सा पर शोध हो रहे हैं। आगे आने वाले कुछ वर्षों में मंत्रों के इलाज की व्यवस्था वैज्ञानिक परीक्षणों से निकलकर सभी के लिए उपलब्ध हो जाएगी।

केंद्र सरकार को भी इस पर गंभीरता पूर्वक विचार करना चाहिए। सरकार इसका वैज्ञानिक परीक्षण करे। और यदि सफलता मिले तो लोक कल्याण हेतु इसे अपनाना चाहिए। आपातकालीन सुरक्षा के लिए औषधि ली जा सकती है लेकिन मूल समस्या का स्थाई समाधान प्रकृति का अनुसरण करने से है।

मंत्र का अर्थ होता है मन को एक तंत्र में बांधना। मन बेचैन है, घबरा रहा है, मन के अंदर असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो रही है तब मंत्र का जाप सबसे कारगर औषधि है। ऐसे में आप जिस भी देवी- देवता को मानते हैं उसकी पूजा करने और मंत्रों को जपने से लाभ होगा। मंत्र तांत्रिक या सात्विक होते हैं। सभी मंत्रों का अलग-अलग महत्त्व एवं प्रभाव है। प्रतिदिन जपने वाले मंत्रों को सात्विक मंत्र कहते हैं। सात्विक मंत्रों को रोग या दैनिक कार्यों में अपनाने से लाभ होता है इससे मन की शक्ति बढ़ती है और भविष्य में आने वाले सभी संकटों से मुक्ति भी मिलती है।

कुछ मंत्रों में विशेष गुण होते हैं जैसे:- "श्री राम जय राम जय जय राम" मंत्र का निरंतर जप करने से मन में शांति का संचार होता है। चिंता से मुक्ति के साथ दिमाग शांत रहता है, नकारात्मक विचार समाप्त होते हैं। "ओम नमः शिवाय" मंत्र का निरंतर जप करने से कष्ट दूर होता है, शक्ति का संचार होता है, चिंता से मुक्ति के साथ मन में शांति और शीतलता मिलती है। " ओम हं हनुमते नमः" मंत्र का जाप करने से डर, भय, घबराहट से मुक्ति मिलती है। कष्ट से छुटकारा दिलाने के साथ-साथ यह मंत्र व्यक्ति के हिम्मत और आत्मविश्वास को बढ़ाता है। " ऊँ नमो नारायण" या "श्रीमन नारायण नारायण हरि हरि" यह मंत्र परिवार में सुख- शांति -समृद्धि, यश की प्राप्ति कराता है, मन को सरल बनाता है। भगवान शिव का "महामृत्युंजय मंत्र" मृत्यु समान काल को टालने व जीवन की रक्षा करने वाला मंत्र है। "गायत्री मंत्र" मोक्ष् दाई मंत्र है यह दु:खों का नाश करता है, पाप को नष्ट करता है, मन को शुद्ध व शांत करता है। " ऊँ गं गणपतए नमः" यह मंत्र समृद्धि दायक है तथा सभी तरह के विघ्नों को हरता है, सुख समृद्धि प्रदान

करता है। " ऊँ कालिके नमः" इस मंत्र से धन वैभव की प्राप्ति होती है, धन से संबंधित सभी प्रकार की दिक्कत दूर होती है, आर्थिक लाभ मिलता है। इस मंत्र का जाप मंगलवार और शुक्रवार को करने से विशेष लाभ होता है। " ऊँ ह्री ह्री श्री लक्ष्मी वासुदेवाय नमः" इस मंत्र के जाप से धन, सुख-शांति की प्राप्ति होती है। तिब्बत में भी एक मंत्र बहुत ज्यादा प्रचलित है "ओम तारे तुत्तारे तूरे सोहा" वहां के लोग अपने सभी कार्यों को सफलतापूर्वक पूर्ण करने हेतु, मनोवांछित फल प्राप्त करने के लिए पूरे श्रद्धा भाव के साथ ध्यान लगाकर इस ग्रीन तारा मंत्र का जाप करते हैं। ग्रीन तारा तिब्बत की देवी हैं जिसे संस्कृत में श्याम तारा भी कहते हैं।

मानव जीवन में भावनाओं की भूमिका

उत्कर्ष शुक्ला, पुत्र
श्री दीप कुमार शुक्ला/पर्यवेक्षक, लेखा द्वितीय

यह एक विचार था जो मुझे काफी समय से परेशान कर रहा था, इसलिए मैंने इसे शब्दों में पिरोने का निर्णय लिया। मैं अक्सर सोचता हूं कि वह एक चीज़ जो हमें दूसरों के प्रति सहानुभूतिशील बनाती है, वह एक चीज़ जो हमें समूहों में काम करने की अनुमति देती है, वह एक चीज़ जो लगभग हर इंसान में स्थिर है (मूल भौतिकी के अलावा), वह है भावनाएं। भावनाएं हर समझदार इंसान में सर्वव्यापी रूप से मौजूद होती हैं।

हालांकि किसी व्यक्ति की प्राथमिकताएं भिन्न हो सकती हैं, लेकिन किसी चीज़ को पाने या खोने पर जो भावना महसूस होती है, वह लगभग सभी के लिए समान होगी, बशर्ते उस चीज़ की प्राथमिकता एक ही स्तर पर हो। इसे दूसरे तरीके से कहें तो, अगर किसी कंपनी के सीईओ की वर्तमान प्राथमिकता अपना व्यापार दूसरे देशों में फैलाना है, तो यह एक गैराज मालिक की प्राथमिकता के समान होगी, जो अपने शहर में दूसरी शाखा खोलने की योजना बना रहा हो। हालांकि उनकी महत्वाकांक्षाएं और उनके लक्ष्य का महत्व व्यक्ति-विशेष के जीवन में भिन्न हो सकता है।

एक साधारण उदाहरण लें, अगर एलन मस्क ट्विटर खरीदने पर खुश होंगे, तो कई दिनों से भूखा एक गरीब व्यक्ति अपने भोजन मिलने पर उससे भी ज्यादा खुश होगा। हालांकि कहा जा सकता है कि ऊपर बताए गए उदाहरण में दोनों लक्ष्यों का महत्व एक-दूसरे से बिल्कुल अलग है। लेकिन हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि मस्क और उस भूखे व्यक्ति की स्थिति की तुलना नहीं की जा सकती। मस्क का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य शायद ट्विटर खरीदना होगा, जबकि उस गरीब व्यक्ति का प्राथमिक ध्यान जीवित रहने पर है। वे दोनों एक ही समय पर अस्तित्व में हैं, लेकिन उनकी स्थिति और महत्वाकांक्षाएं उनके लक्ष्यों को परिभाषित करती हैं।

एक और सरल उपमा हो सकती है: अगर एक अमीर आदमी एक पेंटहाउस खरीदता है, तो एक बेघर व्यक्ति अपनी छोटी सी झोपड़ी खरीदने पर शायद उससे भी अधिक आनंदित होगा, जिसके लिए उसने कड़ी मेहनत की होगी। लेकिन मेरी राय में, भावनाओं की भी एक सीमा होती है। जैसे एक अमीर व्यक्ति अगर 100 एकड़ जमीन खरीदता है, तो वह खुश होगा। कुछ सालों बाद, वही व्यक्ति, जो अब और अधिक सफल है, 1000 एकड़ जमीन खरीद सकता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह पहले की तुलना में दस गुना ज्यादा खुश होगा। जब एक लक्ष्य हासिल कर लिया जाता है, तो मन उस स्तर की खुशी को सामान्य मानने लगता है। उसी संतुष्टि को फिर से पाने के लिए, उसे अपने लक्ष्य ऊंचे रखने होंगे और उन्हें पाने के लिए और अधिक मेहनत करनी होगी।

अगर एक अरबपति एक लग्ज़री कार खरीदता है, तो मुझे नहीं लगता कि वह उतना खुश होगा जितना कि एक गरीब परिवार अपने पहले घर को खरीदकर, या जब एक बच्चा अपना पसंदीदा उपहार पाता है, या जब एक मां अपने खोए हुए बच्चे को ढूंढती है, या जब कोई व्यक्ति अपने जीवनसाथी को पाता है। ये वे क्षण हैं जब अन्य सभी चीजें महत्वहीन हो जाती हैं, और केवल शुद्ध, निस्वार्थ संतुष्टि महसूस होती है।

यह संभवतः इसलिए होता है क्योंकि अगर हम उपरोक्त लक्ष्यों की सामान्य प्राथमिकताओं को देखें, तो हम निम्नलिखित क्रम को सामान्य कर सकते हैं (हालांकि यह हर व्यक्ति की प्राथमिकता के अनुसार भिन्न हो सकता है):

- भोजन और पानी प्राप्त करना (जीवित रहने के लिए आवश्यक)
- अपने जीवनसाथी को पाना/ खोए हुए बच्चे को ढूंढ़ना (यानी वे लोग जो सबसे ज्यादा मायने रखते हैं)
- घर प्राप्त करना (जीवनयापन का साधन)
- पसंदीदा उपहार पाना / लग्ज़री कार खरीदना (भौतिक इच्छाएं)।

हमने निश्चित रूप से इन चीजों का अवलोकन किया होगा। हम किसी को शांत करने की कोशिश करते हैं जब वह बहुत परेशान होता है, क्योंकि हमें पता होता है कि दुखी होने का अनुभव कैसा होता है। हम दुखद फिल्मों को देखकर दुखी होते हैं क्योंकि उसमें पात्रों की भावनाएं हम भी महसूस करते हैं। इसी तरह, हम कॉमेडी फिल्मों पर हंसते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि यदि फिल्म में दिखाया गया मजाक असल जिंदगी में होगा, तो हम वैसा ही आनंद महसूस करेंगे।

इसी तरह, जब हम खबरों में पढ़ते हैं कि किसी के साथ अन्याय हुआ है, तो हम भी उनकी निराशा और गुस्से का कुछ हिस्सा महसूस करते हैं, और आशा करते हैं कि उन्हें न्याय मिलेगा।

भावनाएं वह कड़ी हैं जो हमें वास्तव में यह महसूस करने देती हैं कि दूसरा व्यक्ति किस स्थिति से गुजर रहा है, बशर्ते हमें भी वैसा ही अनुभव और परिस्थितियां मिलें। हमारी इसे संभालने की प्रक्रिया भिन्न हो सकती है, भावनाओं की तीव्रता अलग हो सकती है, लेकिन यह भावना समान होगी। यही वह तत्व है जो हमें एक कार्यशील समाज में जोड़ता है, जिसके कारण हमने अन्य प्रजातियों की तुलना में निरंतर प्रगति की है।

हम अन्य जानवरों की तुलना में इसलिए अधिक सफल हुए क्योंकि हमने साथ मिलकर काम किया, एक सामाजिक प्राणी के रूप में जीवन व्यतीत किया, समस्याओं का मिलकर सामना किया, और एकत्रित जानकारी और अनुभवों का आदान-प्रदान किया। इसका मूल कारण हमारी भावनाओं की समानता थी, जो हमें एकजुट करती है।

मार्गरेट मीड नामक प्रसिद्ध मानवविज्ञानी से जुड़ा एक प्रचलित किस्सा यहाँ प्रासंगिक लगता है। हालाँकि इस कहानी की प्रामाणिकता की पुष्टि या खंडन नहीं हुआ है, लेकिन यह विचार के लिए उपयोगी है। कहा जाता है कि एक बार उनके एक व्याख्यान के दौरान एक छात्र ने उनसे पूछा कि किसी संस्कृति में सभ्यता के पहले संकेत क्या होते हैं। छात्र ने उम्मीद की होगी कि मीड का उत्तर मछली पकड़ने के कांटे, मिट्टी के बर्तन या पिसाई के पत्थरों जैसा होगा—ऐसी चीजें जो आमतौर पर सभ्यता की नींव मानी जाती हैं। लेकिन मीड का उत्तर अप्रत्याशित था। उन्होंने कहा कि सभ्यता का पहला संकेत था एक प्राचीन मानव की ठीक हो चुकी जांघ की हड्डी (फीमर)।

उन्होंने समझाया कि जंगल में "जंगल का कानून" चलता है। शक्तिशाली कमजोर को शिकार बना लेता है। यदि किसी जानवर (जिसमें मनुष्य भी शामिल हैं) की जांघ की हड्डी टूट जाती, तो वह न तो दौड़ सकता, न छिप सकता, और न ही सुरक्षित स्थान पर जा सकता। इसका परिणाम निश्चित रूप से उसकी मृत्यु होती—या तो वह किसी शिकारी का शिकार बन जाता या भूख से मर जाता। इसलिए, एक ठीक हो चुकी जांघ की हड्डी यह प्रमाण है कि किसी ने उस व्यक्ति का ख्याल रखा होगा, तब तक जब तक उसकी हड्डी ठीक न हो गई हो।

यह कहानी सच है या नहीं, यह कम महत्वपूर्ण है। असली बात यह है कि यह भावनाओं के महत्व को उजागर करती है। यह दिखाती है कि कैसे एक व्यक्ति ने दूसरे की मदद की होगी, और उस

मदद पाने वाले व्यक्ति ने शायद अपने जीवन में एक गहरा कृतज्ञता भाव महसूस किया होगा। शायद उसने भविष्य में वह एहसान लौटाने की भी कोशिश की होगी।

इस सरल उदाहरण से पता चलता है कि संकट के समय साझा की गई भावना—चाहे वह करुणा हो, नि:स्वार्थता हो, या मदद करने की इच्छा—ने न केवल एक व्यक्ति को बचाया बल्कि दोनों की जंगल में जीवित रहने की संभावना भी बढ़ा दी। इसी करुणा ने संभवतः बड़े समाजों की नींव रखी, जिस पर आज हम खड़े हैं।

इसके साथ ही, जैसे-जैसे हम विकसित हुए, हमारी भावनाएं भी विकसित हुईं। हम अब कई तरह की भावनाओं को सूक्ष्म अंतर के साथ पहचान सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक ही चेहरा क्रोध, असंतोष, तनाव, या ध्यान केंद्रित करने के लिए भौंहें सिकोड़ सकता है, लेकिन हम इन सभी को अलग-अलग संदर्भों में आसानी से समझ सकते हैं। यह हमारी भावनाओं के विकास और उनके हमारे जीवन में प्रभाव का स्पष्ट प्रमाण है।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम इस भावना को कैसे सीख सकते हैं और इसका उपयोग अपने लाभ के लिए कर सकते हैं। प्राचीन हिंदू ग्रंथों जैसे वेदों और उपनिषदों में "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।" की अवधारणा सिखाई गई है। इसी तरह, ईसा मसीह की दस आज्ञाओं में से एक है, "अपने पड़ोसी से वैसा ही प्रेम करो जैसा तुम स्वयं से करते हो।"

आज के समय में, जब लोग अपने समाज, मित्रों और परिवारों से दूर होते जा रहे हैं, हमारे प्राचीन ज्ञान की यह शिक्षा मानवता को एकजुट करने के लिए आवश्यक है। यह आज्ञा सिर्फ हमारे पड़ोसियों पर लागू नहीं होती, बल्कि उन सभी पर लागू होती है जिनसे हम बातचीत करते हैं। हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि हमारी भावनाएं दूसरों के लिए भी समान होती हैं। यदि हम अपना गुस्सा, निराशा या असंतोष किसी पर निकालते हैं, तो वे भी वही भावनाएं महसूस करेंगे, और इस तरह दुनिया में घृणा बनी रहती है।

"अगर आप एक हत्यारे को मारते हैं, तो हत्यारों की संख्या वही रहती है।"

कल्पना कीजिए, अगर हर कोई दयालु हो और दूसरों की वैसे ही देखभाल करे जैसे वे अपनी करते हैं, तो यह एक आदर्श सामंजस्य होगा। हर कोई अपना काम स्वतंत्र रूप से करेगा, लेकिन जरूरतमंदों को हर संभव सहायता प्रदान करेगा और उन्हें समान रूप से सम्मान देगा। यह किसी प्रकार की "हाइव

माइंड" की तरह होगा, जहां सभी बिना किसी पूर्वाग्रह के, मानव समाज को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए मिलकर काम करेंगे।

यहां तक कि विकास की दृष्टि से भी, समूह में रहना हमारे लिए अधिक लाभकारी है। हमारी प्रजाति प्राकृतिक चयन से इसलिए बची क्योंकि होमो सेपियन्स हमेशा समूहों में काम करते थे। इसका कारण उनकी बेहतर सामाजिक समझ थी, जिसने उन्हें निएंडरथल्स पर बढ़त दिलाई। और दयालुता वह कारक है जो समूह बनाने और सामाजिक होने के लिए सहायक है। कोई भी ऐसा व्यक्ति जो अशिष्ट हो, गुस्सैल हो या झगड़ालू हो, उसके साथ रहना नहीं चाहता, और इसलिए वे अक्सर अकेले पड़ जाते हैं। इस प्रकार, दयालुता ने हमें जीवित रहने में मदद की।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि हमारे जीवन में भावनाओं की भूमिका कितनी स्पष्ट है। इसे गंभीरता से अध्ययन करने और पहले से अधिक गहराई से समझने की आवश्यकता है। यह वह सीढ़ी हो सकती है जो हमें एक प्रजाति के रूप में ऊपर ले जाए या नीचे गिरा दे।

गिरह

डॉ श्रीमती नमिता चंद्रा
सहायक लेखाधिकारी/लेखा- प्रथम

दिल की गिरह खोल दो ....चुप ना बैठो.... कोई गीत गाओ....

गाने की पंक्तियां सुनते हुए मन कहीं अतीत में खो सा गया था। गत वर्ष मेरे जन्मदिन पर पुत्री द्वारा उपहारस्वरुप दिए गए कारवां पर गाने सुनते हुए सुबह की गुनगुनी धूप का आनंद ले रहा था कि इस गाने ने हृदय की तरंगों में न जाने कितनी ही प्रतिध्वनियाँ सी तरंगित कर दी थी। सुधा, मेरी अर्धांगिनी पास ही बैठी थीं किंतु मेरा हृदय तो एक लंबा सफर तय कर लगभग 40-42 वर्ष पीछे जा चुका था दिल में बंधी हुई ना जाने कितनी गिरहें स्वतः ही खुलती जा रही थीं और मैं दिवास्वपन के हिंडोले में झूलता एक दिव्य मनः स्थिति में आ गया था। मेडिकल कॉलेज में पहला दिन... बंद पिंजरे से निकले हुए पंछी के समान मैं काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के गेट पर खड़ा था। एक ऐसा पंछी जिसके पिंजरे के दरवाजे अचानक से खोल दिए गए हों और उसका एक नई दुनिया से साक्षात्कार हो रहा हो। पिताजी ने छात्रावास में रहने का सारा प्रबंध कर दिया था। आज कॉलेज में मेरा पहला दिन था मन में जाने कितने भय, अनिर्णय एवं संशय चल रहे थे। मेरा रूममेट आशुतोष भी साथ ही था। मैं कदाचित भाग्यशाली था कि मेरा रूममेट मेरा क्लासमेट भी था। एम.बी.बी.एस. प्रथम वर्ष में हम दोनों ने एक साथ ही दाखिला लिया था और थोड़ा अनुनय विनय के पश्चात हम दोनों को एक ही रूम मिल गया था। आशुतोष से मेरा परिचय एक ही दिन पूर्व हुआ किंतु कहते हैं ना अजनबी शहर में अगर अपने जैसा कोई मित्र मिल जाए तो राहें बहुत आसान हो जाती हैं। मैं और आशुतोष ऐसे ही दो नव पथिक एक राह पर बढ़ चले थे। कॉलेज के प्रथम दिन से ही हम दोनों एक दूसरे का संबल बनकर मजबूती से खड़े रहे और धीरे-धीरे हम लोगों की मित्रता प्रगाढ़ होती गयी।

देखते ही देखते प्रथम वर्ष बीत गया और हम द्वितीय वर्ष में आ चुके थे। आशुतोष पढ़ने में अत्यंत ही तीव्र बुद्धि था। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से एमबीबीएस करते हुए हम लोगों ने न जाने कितनी बार

बनारस की सकरी गलियों में दौड़ लगाई थी। लंका से अस्सी... अस्सी से गोदौलिया हम अक्सर चहल कदमी करते हुए चले जाते। आशुतोष और मैं बनारस में नए अवश्य थे किंतु हम दोनों ने साथ में उस शहर के न जाने कितने राज खोल दिए थे। अक्सर ही शाम को टहलते हुए बनारस के अलग-अलग घाट पर चले जाया करते थे और रविवार तो हमारा अक्सर ही दशाश्वमेघ घाट पर गंगा आरती देखते और गंगा की लहरों का आनंद उठाते बीता करता था। हम दोनों एक दूसरे के पूरक हो गए थे और इस साथ ने घर परिवार से दूर रहने की टीस को कम कर दिया था। हम दोनों अब मन लगाकर अपने एम.बी.बी.एस. के द्वितीय वर्ष की पढ़ाई में लगे हुए थे।

आशुतोष के जीवन का मुख्य ध्येय ही एक अच्छा चिकित्सक बनकर मानव जीवन की सेवा करना और अपने माता-पिता का स्वप्न पूरा करना था। वह पूरी तन्मयता से पढ़ाई करता और मेरी भी हरसम्भव मदद करता। कक्षा में भी हम दोनों की मित्रता सर्वविदित थी। शायद उम्र का असर था या काशी हिंदू विश्वविद्यालय के माहौल का असर कि मैं भी उस समय थोड़ा बहकने लगा था। कक्षा में पढ़ने वाले कुछ बिगड़ैल धनाढ्य लड़कों के साथ ने मुझपर बहुत असर किया और अब मैं आशुतोष को अक्सर ही छोड़कर उनके साथ समय बिताया करता। कहते हैं बुरी संगति आपको बहुत जल्दी अपनी गिरफ्त में ले लेती है और शायद मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा था। दिसंबर का अंत था और सर्दी की छुट्टियां होने वाली थीं। सभी अपने घर जाने के लिए इच्छुक थे। छुट्टियों के पहले का अंतिम दिन अपने-अपने तरीके से मनाना चाहते थे और नए वर्ष के स्वागत हेतु तरह-तरह की प्लानिंग कर रहे थे।

आशुतोष क्लास में आया और मेरे पास आकर बैठकर मुझसे कहने लगा“यार कल तो तू भी निकल जाएगा।”मैंने कहा“हाँ यार कल मुझे घर जाना है टिकट तो हो गई है...।और तुझे कब जाना है”?“यार शुभम मैं सोच रहा हूं कि हॉस्टल में ही रुक जाऊं और नेक्स्ट सेमेस्टर की तैयारी करूं क्योंकि इस सेमेस्टर की पढ़ाई थोड़ी कठिन है। प्रोफेसर साहब ने जो नोट्स दिए हैं मैं उन्हें एक बार समझना चाहता हूं और कल तक वह भी रहेंगे इसलिए कोई कठिनाई होने पर मैं उनसे डिस्कस करके ही जाऊंगा”आशुतोष ने कहा। मैंने आशुतोष की तरफ देखते हुए कहा“अरे यार कभी पढ़ाई से हटकर भी कुछ देखा करो, आज शाम की पार्टी में तो आ रहे हो ना ? हम सबने एक छोटी सी पार्टी रखी है हम सब जाने से पहले थोड़ी मौज मस्ती करेंगे तू भी आ जाना”आशुतोष ने कहा।“हां यार आऊंगा लेकिन थोड़े ही समय के लिए बस“ मैंने आशुतोष को देखते हुए कहा“अरे कभी तो पढ़ाई के अलावा भी कुछ सोच लिया कर"। आशुतोष ने कहा,“यार यह चार साल अगर पढ़ाई पर सोच लूंगा तो फिर बाकी का जीवन पड़ा है बाकी

सारी बातें सोचने के लिए। मैंने उस समय उसकी बात हंसी में उड़ा दी और मैं पार्टी की तैयारी में व्यस्त हो गया।

वास्तव में भाग्य ने आपके लिए क्या सोच रखा है यह कोई नहीं जान सकता। मुझे कहाँ पता था कि थोड़ी सी मस्ती का कितना बड़ा खामियाजा भुगतना पड़ता है। विशाल जो मेरा नया-नया दोस्त बना था उसने मुझसे कहा," क्यों आज पार्टी में कुछ अलग किया जाए? मैंने कहा,"अलग मतलब ? "अरे कुछ धमाल...। मैं सोच रहा था कि कुछ नया किया जाए विशाल बोला। मैंने कहा "क्या ही करोगे नया?"उसने कहा,"कुछ धमाका करते हैं।"मैं ना समझ की तरह बोल पड़ा, "कैसा धमाका?" उसने कहा"यह जो अपना डीन है यह थोड़ा ज्यादा ही नियम कानून चलाता है, क्यों ना इसकी बालकनी में कुछ धमाका किया जाए"। मैंने कहा,"क्या बात कर रहे हो...? ऐसा कुछ नहीं करना है।"विशाल बोला,"बस डर गए... ? इसीलिए तो मैं कहता हूं कि तुम डरपोक हो। सच में बम गिराने को थोड़ी नहीं कह रहा हूं यार। अरे दिवाली के पटाखे की बात हो रही है। एक बम लेकर धीरे से उनकी बालकनी में फेंक देते हैं। उसके बाद धमाके का मजा लिया जाए विशाल हंसते हुए बोला। मैंने कहा,"यह ठीक नहीं है"। विशाल मुँह बनाकर बोला,"यार तुम बहुत डरपोक हो। अरे थोड़ा मजे लेंगे और तुम तो...। तुझमें तो हिम्मत ही नहीं है। चल मैं ही कुछ सोचता हूं"। उसका यह कहना शायद मैंने अपने दिल पर ले लिया। मैंने कहा"मैं डरपोक नहीं हूं" ।उसने कहा,"तू डरपोक है"। और शायद उसके उकसाने में आकर मैंने कहा, मैं कर सकता हूं यह काम ऐसा कुछ नहीं है लेकिन यह ठीक नहीं है"। विशाल बोला,"चल जाने दे तुझसे नहीं होगा, एक नंबर का डरपोक है तू"। मैंने कहा,"नहीं अब मैं यह काम करूंगा"। और मैं वहां से चला आया।

रूम में आकर मुझे परेशान सा बैठा देख कर आशुतोष ने कहा, "क्या बात है? तू कुछ परेशान है..? मैंने बोला,"नहीं कुछ नहीं "। आशुतोष ने कहा,"मुझे नहीं बताएगा? मैंने कहा, "कुछ नहीं बोला ना...। तू अपना काम कर"आशुतोष के रूप में इश्वर ने शायद मुझे एक सच्चा मित्र दिया था। वह मेरी बातों से आश्वस्त नहीं हुआ शायद मुझे जरूरत से ज्यादा ही समझने लगा था। आशुतोष को कुछ शंका हो रही थी लेकिन उसने कुछ कहा नहीं।

फिर मैंने विशाल के साथ जाकर पूरा प्लान बनाया। रात 10:00 बजे डीन की बालकनी में बम फेंकने का डिसाइड किया गया। शाम के समय सब पार्टी में व्यस्त थे और 9:30 बजे के करीब जब पार्टी

पूरे शबाब पर थी मैं सारा सामान जेब में लेकर धीरे से बाहर आया और डीन की बालकनी की तरफ जाकर चहलकदमी करने लगा। मैंने पूरा जायजा लिया और थोड़ी देर आराम से ठहरने के बाद बालकनी के नीचे लगे पाईप के सहारे कोने में छिप गया। तभी मुझे कुछ आहट लगी और मैं सांस रोक कर वहीँ खड़ा रहा। डीन का अर्दली किसी को कुछ बोल रहा था और फिर दो लोगों के जाने की आहट सुनाई दी। इसके लगभग पांच मिनट बाद मुझे बालकनी के कोने में जगह मिली जहां मैं आराम से चढ़ सकता था और वहां से बम को फेंक सकता था। मैंने बम जेब में रखकर चढ़ना शुरू किया और बालकनी तक पहुंच गया। आसपास कोई नहीं था। मैं निश्चिंत था वहां थोड़ी देर खड़ा रहा। धीरे से माचिस जलाई और बम को बालकनी की तरफ जलाकर उछाल दिया। इसके पश्चात मैं नीचे आया और तभी तेज धमाके की आवाज़ सुनाई दी। मैं तेज कदमों से हाल की तरफ बढ़ा जहाँ पार्टी चल रही थी ।

मैं हॉल के पास पहुंचा ही था कि मुझे आशुतोष दिखाई दिया। उसकी आँखों में असंख्य प्रश्न थे। सर्द लहजे में उसने मुझसे कहा,"यह तूने ठीक नहीं किया शुभम। मुझे सब पता चल गया है ...." तभी डीन का अर्दली भागते हुए आया और बोला"साहब की बालकनी में धमाका हुआ है जिसमें साहब भी जख्मी हो गये हैं।" सब परेशान हो कर भागे और थोड़ी देर में डॉक्टर आ गए। डीन के पैरों के पास पटाखा फट गया था जिससे उनका दाहिना पंजा झुलस गया था। सभी सकते में थे कि यह किसकी करतूत हो सकती है। मैंने विशाल को खोजना चाहा तो पता चला कि वह तो पार्टी शुरू होते ही चला गया था। उसकी रात नौ बजे की ट्रेन थी। मैं बहुत घबरा गया था। अब क्या करूँ कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आँखों में आंसू भर कर मैं कमरे में आ गया। मुझे अब मेरा भविष्य अन्धकार में दिख रहा था। जैसे ही पता चलेगा कि यह मेरी करतूत है, मुझे तो तुरंत ही कालेज से निष्कासित कर दिया जाएगा। यही सब सोचते हुए कब मेरी नींद लग गयी पता ही नहीं चला।

अगली सुबह सब असेम्बली में एकत्रित थे। डीन जैसे ही आये सबकी धड़कनें बढ़ गयीं। उन्होंने माइक हाथ में लिया और बैठे हुए ही बोलने लगे,"मुझे नहीं पता कि यह शरारत करने की आवश्यकता क्यों पड़ी किन्तु जिस विद्यार्थी ने यह करतूत की है उसे क्षमा नहीं किया जाएगा। मेरे अर्दली ने उस लड़के को देख लिया था मुझे उसका नाम पता है। उसका नाम है ..." मेरे हृदय में मानों घोड़े दौड़ रहे हों मैंने डर कर अपनी आँखें बंद कर ली और सांस रोक कर अपने नाम की प्रतीक्षा करने लगा। डीन ने कहा,"उसका नाम है आशुतोष चन्द्र ...." सबकी आंखे आशुतोष की तरफ टिक गयीं। वह हतप्रभ सा देखता रह गया। डीन ने आगे कहा," मेरे अर्दली ने बताया कि रात में उसने देखा कि आशुतोष मेरी

बालकनी के पास टहल रहा था । उसने डांटा भी किन्तु इसने फिर भी ऐसी गलत हरकत की। मैं हक्का-बक्का सा रह गया। कुछ समझ ही न आया। आशुतोष ने निर्विकार भाव से मुझे देखा। बहुत कुछ था उन आँखों में... लेकिन मैं जान कर भी नासमझ बना रहा ।

डीन ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा"इस घटना से आप सबको सीख मिलेगी मैं गुनाहगार को ऐसी सजा दूंगा कि वह सबके लिए मिसाल हो। मिस्टर आशुतोष आप मेरे चैम्बर में आइये।" और फिर सभी वहां से बाहर चले गए। मेरी हिम्मत ही नहीं हो रही थी कि मैं आशुतोष से निगाहें मिला सकूं। चोर नज़र से देखा तो वह एक हारे हुए इंसान की तरह वहीँ खडा था। चेहरा निर्विकार ... बिलकुल चुप। मैं भी कितना स्वार्थी हो गया था कि मैंने सच बोलने का प्रयास ही नहीं किया। मन में झंझावात चल रहे थे कि यदि सच बोल दिया तो सब ख़त्म हो जायेगा ... यह सुनहरा भविष्य ... मेरा कैरियर.... नहीं..। और मैं वहां से चुप चाप चला आया।

कॉलेज के डीन ने आशुतोष को तीन माह के लिए सस्पेंड कर दिया। वह कमरे में आया और बिना कुछ बोले बैठा रहा। कुछ देर बाद वह कहीं चला गया। मैंने उसे रोकने की व उससे बात करने की कोशिश भी नहीं की। काश मैंने अपने मन की गिरह खोल कर उससे बात की होती और अपना सच सबको बताने का साहस किया होता ....। सब अपने घर चले गए मैं भी घर आ गया। उन दिनों सबके पास फोन तो होते नहीं थे कि बात हो पाती। अतः संवाद रुक सा गया था। मैं भी घर आ कर इस घटना को भुलाने का प्रयास कर रह था। किन्तु रह-रह कर आँखों के सामने आशुतोष की सूरत आ जाती।

छुट्टियां समाप्त होने के पश्चात सब वापस आ गए। मैं रूम में गया। वास्तव में साहस नहीं हो रहा था आशुतोष का सामना करने का बहुत हिम्मत करने के उपरांत मैंने कमरे में प्रवेश किया तो देखा रूम खाली था उसका कोई भी सामन, नामोनिशान नहीं था। न जाने कहाँ चला गया। ऑफिस में पता किया तो बताया गया कि उसने पढ़ाई छोड़ दी। चपरासी ने बताया कि उस दिन वह बहुत देर बाद वापस आया और ऑफिस में जा कर टी.सी. हेतु आवेदन दे दिया। कोई नहीं जानता उसने ऐसा क्यों किया। डीन ने स्वयं उससे बात करनी चाही लेकिन उसने एक शब्द नहीं बोला। मैं हतप्रभ सा रह गया। ऑफिस के रिकॉर्ड से उसका पता निकलवाया और सोचा मैं खुद जाकर डीन को सच बता दूंगा और उसे वापस ले आऊंगा किन्तु दो पल में ही वास्तविकता एवं स्वार्थ के धरातल पर आ गया और चुपचाप कमरे में जा बैठा।

एम.बी.बी.एस. पूरा करके मैंने एम.एस. कर लिया और अब मैं डॉक्टर शुभम राय, एक जाने-माने सर्जन के रूप में जाना जाता हूँ। दो वर्ष पूर्व एक गाल-ब्लैडर स्टोन के एक मरीज का इलाज करते हुए पर्चे पर आशुतोष चन्द्र देखकर मन ठहर गया और जब वह भीतर आया तो चेहरे की लकीरों से वर्षों पूर्व के अक्स को मिलाने का मैं प्रयास करता उससे पूर्व वह स्वयं ही बोल पड़ा.... “शुभम यह मैं ही हूँ। “ बरसों से बंधा हुआ बांध बह गया .. मैं उसके गले लग कर रो पड़ा ,”कहाँ चला गया था तू यार ... मुझे माफ कर दे, उस दिन तेरी गलती नहीं थी...” । तभी आशुतोष ने मुझे चुप करते हुए कहा, बस कर, चुप हो जा... मुझे पता है कि वह तेरी करतूत थी। "मैंने तुझे देख लिया था और तुझे रोकने के लिए गया था जब अर्दली ने मुझे देख लिया और फिर यह सब..." । मैं उसकी तरफ अविश्वास से देखने लगा , "तो तूने सच कहा क्यों नहीं" ? मैंने कहा। एक फीकी मुस्कान के साथ उसने कहा यार किसी एक पर तो इलज़ाम आता ही न मैं नहीं तो तू होता। मैं निःशब्द हो गया, कोई उत्तर नहीं था मेरे पास। कुछ देर की ख़ामोशी के बाद मैंने पूछा,” पर तूने पढ़ाई क्यों छोड़ दी ... बिना कोई खबर दिए तू कहाँ चला गया?”

एक लम्बी साँस छोड़ते हुए वह बोला, “मन टूट गया था यार ... दोबारा उस कॉलेज में जाने की... सबसे निगाहें मिलाने की सामर्थ्य नहीं थी। सोचा जीवन ख़त्म कर लूँ .... लेकिन हिम्मत नहीं हुई। वापस आकर कुछ दिनों बाद पुनः पढ़ाई शुरू की और बायोलोजी से एम.ए. और फिर बी.एड. किया। अब एक इंटर कोलेज में लेक्चरर हूँ बस कुछ वर्षों में सेवानिवृत्त होने वाला हूँ। उस घट्ना ने जीवन की राह ही बदल दी। लेकिन जो हुआ अच्छा ही हुआ अब इन बच्चों को पढ़ाने के साथ सही राह भी दिखाता हूँ और कोशिश करता हूँ कि किसी निरपराध के साथ नाइंसाफी न हो “ उसने मुझे देखते हुए कहा। और फिर वह चला गया। फिर एक बार मुझे निःशब्द करके।

उसके उत्तर ने मुझे लाजवाब कर दिया था सच ही तो कह रहा था वह। एक अपराधी के कारण एक निरपराध को सजा मिली थी। मैंने उस दिन यदि सच बोलने का साहस कर लिया होता... अपने दिल की गिरह खोल दी होती तो कदाचित आज तस्वीर कुछ और ही होती ... । आज इस गाने के बोल ने मेरे जख्मों को पुनः कुरेद दिया था और पुनः मन में वही टीस उठ रही थी कि यह दौलत.... शोहरत ... सब किसी के द्वारा दी गयी भीख थी।

जैसलमेर - 'स्वर्ण नगर' का अविस्मरणीय सफ़र

जतिन फरवानी
लेखाकार/लेखा द्वितीय

सफर का आगाज़

फरवरी 2017, कड़ाके की सर्दी थी और इंजीनियरिंग कॉलेज का दूसरा साल चल रहा था। पढ़ाई के बीच समय काटने के लिए कुछ रोमांचक करने का ख्याल अक्सर आ ही जाता है। चार दोस्त—प्रवेश, सुनील, मना और शशि—हमेशा ऐसी किसी योजना में सबसे आगे रहते थे।

इस बार उनकी मंज़िल थी जैसलमेर—सुनहरे रेगिस्तान की धरती। उनके पास सीमित पैसे थे, लेकिन उत्साह और जोश असीमित था। उन्होंने फैसला किया कि वो यह सफर सिर्फ 1500-1500 रुपये में पूरा करेंगे और बिना रिज़र्वेशन के जनरल डिब्बे में सफर करेंगे। उनकी योजना में कोई लक्ज़री नहीं थी, लेकिन असली मज़ा तो इसी में था।

तैयारी और योजना

सफर से एक हफ्ता पहले सभी ने अपने-अपने घरों से इजाज़त ली। हालांकि, जैसे अक्सर होता ही है कि परिवार में सवालों कि अदालत लग ही जाती है, सभी ने यह ही बताना सही समझा कि सिर्फ दोस्तों के साथ एक छोटे से एडवेंचर पर जा रहे हैं। सफर कुछ ऐसा था कि टिकट जनरल का ही था, लेकिन मन में ख्वाब प्रीमियम क्लास वाले थे।

सफर का पहला चरण था फ़िरोज़पुर से बीकानेर तक ट्रेन का सफर। इंटरनेट से ट्रेन की पूरी जानकारी निकालने के बाद, सभी ने अपना सारा सामान पैक किया—कुछ कपड़े, स्नैक्स और थोड़े पैसे।

जनरल डिब्बे की चुनौती

शुक्रवार शाम को फ़िरोज़पुर स्टेशन पहुंचते ही देखा की ट्रेन खड़ी हुई है, अहमदाबाद एक्सप्रेस के जनरल डिब्बे में घुसते ही असली चुनौती सामने आई। सीट ढूंढने की मशक़्क़त पहले ही शुरू हो चुकी थी। किसी तरह कोने में जगह मिल पायी। थकान और ठंड के बावजूद, उनके चेहरों पर उत्साह की चमक थी।

शुरुआती कुछ घंटे गाने सुनने और आपस में हंसी ठिठोली में बीते। खिड़की से बाहर झांकते हुए रात का अंधेरा और ठंडक उन्हें रोमांचित कर रहा था। धीरे-धीरे ट्रेन की आवाज़ लोरी बनती गई, और चारों ही अपनी-अपनी सीटों पर नींद की आग़ोश में खोने लगे।

बीकानेर का स्वागत

सुबह के करीब चार बजे ट्रेन बीकानेर स्टेशन पर रुकी। सर्द हवा और स्टेशन का वीरानापन, सफर की असली शुरुआत का एहसास दिला रहा था। स्टेशन पर चाय की चुस्की लेते हुए सभी जैसलमेर की ट्रेन पकड़ने का इंतजार करने लगे।

बीकानेर स्टेशन पर रुकते समय उन्हें पास की गलियों में घूमने का ख्याल आया। उन्होंने वहां प्रसिद्ध बीकानेरी भुजिया और गर्मागरम कचौड़ी का स्वाद लिया। यह नाश्ता ठंड में किसी वरदान से कम नहीं था।

जैसलमेर का पहला दीदार

सुबह सात बजे वो जैसलमेर की ट्रेन में बैठ चुके थे। जैसे-जैसे ट्रेन रेगिस्तान के रास्तों से गुजरी, खिड़की से बाहर रेत के टीले और दूर तक फैला सन्नाटा दिखाई देने लगा। यह नज़ारा ऐसा था, जिसे शब्दों में बयां कर पाना मुश्किल है।

जैसे ही ट्रेन जैसलमेर स्टेशन पर रुकी, ऐसा लग रहा था मानो कि पूरा शहर ही सुनहरे पत्थरों से तराशा गया हो। "सुनहरे शहर" की यह पहली झलक किसी को भी मंत्रमुग्ध करने वाली थी। स्टेशन पर उतरने के बाद, होटल खोजने की तलाश में सभी अलग-अलग दिशा में सड़कों पर घूमने लगे।

काफी प्रयासों के बाद, सुनील और मना की बात किसी जीप वाले से हुई, जिसने उन्हें 200 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से होटल का प्लान बताया। ये सुनकर उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि योजना पहले से ही धर्मशाला में रुकने की थी, जहाँ सस्ते दामों में रहने का बंदोबस्त हो सके। जीप वाले ने बताया कि वह भी ऐसे ही होटल से जुड़ा है, और उस पर विश्वास करते हुए सब जीप में बैठ गए। लेकिन स्टेशन के बाहर खड़े होकर अलग-अलग एंगल में ढेर सारी सेल्फियाँ लेना कोई नहीं भूला।

जीप उन्हे 10 मिनट में "अमर होटल" पहुँचा गई। होटल ठीक-ठाक लगा, और उन्होंने कमरे को देखकर तुरंत फाइनल कर दिया। फिर बारी-बारी से नहाने और फ्रेश होने चले गए। इतने में होटल के मैनेजर ने आवाज़ें लगानी शुरू कर दी और उन्हे ऊपर बुलाने आ गया। इस पर कुछ शक की बू आना लाज़मी था।

धोखे का कारोबार

सभी फ्रेश होकर नीचे होटल के ऑफिस में गए जहां मैनेजर ने पहले मीठे शब्दों में बात की, फिर असली बात बताई कि "200 रुपए प्रतिदिन तब है, जब आप होटल का 3600 रुपए प्रति व्यक्ति का जैसलमेर टूर पैकेज लेंगे।" यह सुनकर सबके होश उड़ गए। "यह तो धोखा है! ऐसी कोई बात तय नहीं हुई थी। उस ड्राइवर को बुलाइए।" सभी ने एक स्वर में कहा।

मैनेजर ने हामी भरी, लेकिन कुछ ही पल में होटल के अन्य कर्मचारी भी वहाँ आ गए। सभी गुस्से में घूरने लगे, मानो कह रहे हों, "कैसे नहीं दोगे पैसे?" माहौल तनावपूर्ण हो गया तो तत्काल यह ठान लिया कि अब इस होटल में कोई नहीं रुकेगा। थोड़ी बहस और तर्क-वितर्क के बाद, सिर्फ 200 रुपए देकर अपना सामान और आत्मसम्मान दोनों उठाया और बाहर आ गए।

बाहर निकलते ही वह ड्राइवर दिखा, जो उन्हें होटल तक लाया था। गुस्से में सभी ने उसे और होटल वालों को ठग कहकर बुलाया, लेकिन वह हँसते हुए निकल गया। यह उनकी यात्रा की सबसे खराब शुरुआत थी।

धर्मशाला की तलाश

अब तलाश एक नए ठिकाने की थी तो सभी ने तुरंत फोन पर मैप को याद किया और खोज कर नजदीकी "जाट धर्मशाला" की ओर बढ़ चले। रास्ते में सुनील ने धीरे से कहा, "मुझे लगता है, कोई हमारा पीछा कर रहा है।" हम सबने बारी-बारी मुड़कर देखा। सड़क के किनारे, एक व्यक्ति लगातार हमारी ओर देख रहा था। वह होटल का ही एक कर्मचारी था। उसको अनदेखा कर और तेजी से धर्मशाला पहुँचे। वहाँ मना और सुनील ने अपने जाट होने का हवाला दिया और उनके साथ बताकर प्रवेश कराया। आखिरकार एक सादा चार पलंग वाला कमरा मिल ही गया।

धर्मशाला की सादगी और स्वादिष्ट खाना

भूख से बेहाल, धर्मशाला वालों से आस-पास खाने की जगह का पता चला। उन्होंने पास ही एक ढाबे की जानकारी दी जहाँ 70 रुपए में भरपूर थाली मिलती थी। बस फिर क्या था, तुरंत ही सब वहाँ जा पहुँचे और जमकर खाना खाया। स्वादिष्ट भोजन ने उनके मूड को बेहतर कर दिया। वापस धर्मशाला आकर सब अपने-अपने पलंग पर गिरे और गहरी नींद में सो गए।

शाम का जादू

शाम को, तय की गई योजना के अनुसार सब "घड़ीसर झील" देखने चलने के लिए तैयार हो गए। झील का वातावरण जादुई था। हल्की ठंडी हवा और सूर्यास्त की सुनहरी रोशनी ने जैसलमेर को और भी खूबसूरत बना दिया था। कुछ विदेशी पर्यटक अपने उकेलेले पर धुन बजा रहे थे। उनकी आवाज़ और झील का माहौल "इन्क्रेडिबल इंडिया" के कथन का अनुभव करा रहा था।

झील में तैरती मछलियाँ और पानी पर सूरज की परछाई, दोनों मिलकर ऐसा दृश्य बना रहे थे कि वहाँ से किसी के जाने का मन कैसे ही करता । पानी में पत्थर फेंकने और उसे उछालने की प्रतियोगिता शुरू हो चुकी थी, लेकिन वहां आए पर्यटक बस इस जादुई पल को महसूस कर रहे थे।

लजीज स्नैक्स की तलाश

सूर्यास्त के बाद, भूख फिर से हावी होने लगी। हमने पास की दुकानों की ओर रुख किया, जहाँ "माखनिया लस्सी" और "प्याज़ कचौरी" के चर्चे थे। स्वादिष्ट स्नैक्स ने सबका दिन और भी यादगार बना दिया।

रात की शांति

भूख मिटाने के बाद, सब वापस धर्मशाला लौटे। अपने-अपने पलंग पर लेटकर दिनभर की तस्वीरें और वीडियो एक-दूसरे के साथ साझा किए। व्हाट्सएप स्टेटस अपडेट किए और मजेदार बातों में रात बीत गई। जैसलमेर में पहला दिन रोमांच और अनुभवों से भरपूर रहा। अगले दिन की तैयारियों के साथ सबने गहरी नींद ली, क्योंकि जैसलमेर के किले और रेगिस्तान की नई कहानियाँ लिखनी थीं।

जैसलमेर का दूसरा दिन

राजस्थान की रात के ठंडे मौसम का एहसास तब हुआ जब रजाई की जरूरत पड़ी। सौभाग्य से धर्मशाला में पर्यटकों को रजाइयाँ दी गई थीं। सुबह सूरज की किरनें खिड़की से सीधे चेहरे पर पड़ीं, और उनकी गरमाहट ने उन्हें जगा दिया। एक-एक करके सभी तैयार हुए और पास की एक मशहूर दुकान पर नाश्ते के लिए गए, जिसका जिक्र गूगल रिव्यूज में था।

दुकान पर चाय और मिर्ची वड़ा का ऑर्डर दिया गया। शशि ने छोटे से चाय के गिलास को देखकर मजाकिया अंदाज में कहा, "बीस रुपये के हिसाब से कप तो बहुत बड़े हैं।" दुकानदार ने मुस्कुराते हुए चाय दी। जैसे ही केसरिया रंग की वह चाय चखी गई, समझ आ गया कि उसकी मुस्कान का मतलब क्या था। चाय इतनी स्वादिष्ट थी कि उसका ज़ायका आज भी बरकरार है। मिर्ची वड़ा भी बेहतरीन था, और यह नाश्ता उनकी सुबह की एक शानदार शुरुआत बन गई।

पटवों की हवेली और जैसलमेर किला

सुबह के समय पटवों की हवेली का प्लान बनाया गया। यह हवेली जैसलमेर की एक प्रमुख ऐतिहासिक धरोहर थी, जिसे देखकर जैसे समय ठहर सा गया हो। हवेली की वास्तुकला इतनी जटिल और अद्वितीय थी कि उसमें खो जाना लाज़मी था। हर दीवार, हर खिड़की और हर छत पर कुछ न कुछ रोचक था, जो राजस्थानी शाही जीवनशैली की गवाही देता था। हवेली के अंदर रखी पुरानी वस्तुएं, उनके डिजाइन, और आंतरिक सजावट ने राजपूत काल की भव्यता का अहसास कराया। हवेली में बिताए गए दो घंटे जैसे पलक झपकते ही बीत गए। पूरे वातावरण में बसी पुरानी महक और आभा को कैमरे में कैद न कर पाना मुश्किल था।

फिर सभी जैसलमेर किले की ओर बढ़े। किला भी पास ही था, और वहाँ का दृश्य अद्भुत था। इस किले में हर दिशा से घूमते हुए, उस किले के हर कोने में बसी शाही गरिमा और इतिहास को महसूस करते हुए दोस्तों का समूह। किले के भीतर एक छोटा सा शहर बसा हुआ था, जिसमें लोग आज भी पुराने वंशों की परंपराओं को निभाते हुए अपने घर और दुकान चला रहे थे। किले में अलग-अलग राज्यों और देशों से आए हुए लोग मिल रहे थे, जो यहाँ के ऐतिहासिक स्थल और संस्कृति को समझने के लिए आए थे। वहाँ की रेत और सूरज की तेज़ किरणों से बचने के लिए राजस्थानी पगड़ी एक अच्छा उपाय था, इसी पर अमल करतेहुए पगड़ी खरीद ली गई और अब खुद को राजस्थानी ही समझना महसूस होने लगा था। पगड़ी पहने हुए मानो अपने आप को जैसलमेर की संस्कृति के साथ जोड़ने का एहसास हुआ। अब बस नत्थूलाल जैसी बड़ी मूंछों की कमी महसूस हो रही थी, जो जैसलमेर की शान मानी जाती हैं।

किला सचमुच एक जीवित इतिहास था। किले के अंदर के गलियारे, महल, और छोटे घरों में जाकर उन इतिहासकारों और शाही परिवारों के जीवन के बारे में सोचते हुए वो। यहाँ की हर वस्तु और हर स्थापत्य एक कहानी कह रही था। किले के हर कोने में यह अहसास होता था कि जैसे समय वहीं रुक सा गया हो। किले के अंदर के छोटे-छोटे गलियारों से चलते हुए इतिहास के हर पहलू को निहारना एक अलग अनुभव सा प्रतीत हो रहा था।

सम सैंड ड्यून्स की ओर

सम सैंड ड्यून्स जाने का समय अचानक से हाथ से निकल गया। सुबह से लेकर दोपहर तक की व्यस्तता ने उन्हें समय का एहसास ही नहीं होने दिया। 4 बजे के आसपास समझ में आया कि अब सम सैंड ड्यून्स जाने का समय नहीं है। किसी से रास्ता पर पता चला कि वहाँ जाने के लिए सरकारी बस सुबह

जाती है और अगली सुबह वापस आती है। चूंकि पास वहाँ रात बिताने का बजट नहीं था, इसलिए यह तय किया गया कि जैसलमेर की गलियों और स्ट्रीट फूड का ही आनंद लेना बेहतर होगा।

अब ऐसी शानदार और संस्कृतिक जगह पर वहां के दुकानों से अपने परिवार के लिए कपड़े तो खरीदने ही थे और फिर किले के पास एक ऊँचे कैफे में चाय पीने के लिए बैठने का प्लान बन गया। कैफे से शहर का दृश्य बहुत सुंदरऔर मनमोहक था। हवा में हल्की ठंडक और नीचे फैला जैसलमेर का शहर, जो रेत में लिपटा हुआ था, एक शांतिपूर्ण अनुभव था। वहाँ बैठकर अपने अगले कदम के बारे में सोचा गया और तय किया गया कि सम सैंड ड्यून्स अगले दिन ही देखा जाए।

सैंड ड्यून्स का जादू

सुबह नाश्ते के दौरान उन्हें एक होटल वाले से पता चला कि वह टेंट होटल में खाना सप्लाई करने जा रहा है। उसने 100 रुपए प्रति व्यक्ति के हिसाब से अपने वाहन में ले जाने का प्रस्ताव दिया तो उसका प्रस्ताव तुरंत ही स्वीकार कर लिया गया और वह उन्हें तेज़ी से होटल तक ले गया। होटल पहुँचने के बाद उन्हें पानी पिलाया गया और फिर सैंड ड्यून्स का रास्ता दिखाकर छोड़ दिया गया।

धीरे-धीरे रेतीले रास्ते पर बढ़ते कदम, जूते उतारकर रेत में चलने का अनुभव बहुत खास था। रेत के बड़े-बड़े टीले आँखों के सामने थे। सभी उन पर चढ़ने की कोशिश करने लगे, और हर कदम पर रेत में खोने का मजा लिया। वहाँ की शांति और आकाश की विशालता ने उन्हें एक अलग ही दुनिया में प्रवेश करा दिया था। सब तस्वीरें और वीडियो खींचने में व्यस्त हो गए, जब एक ट्रैक्टर वाला उनकेपास आया और बताया कि यह सही जगह नहीं है। उसने फिर उन्हें सही स्थान पर छोड़ दिया।

वहाँ पारंपरिक राजस्थानी टेंट होटल थे, जहाँ रात में लोग लोक नृत्य और पारंपरिक व्यंजनों का आनंद लेने आते हैं। प्रवेश और शशि ने ऊँट की सवारी करने का मन बनाया, लेकिन मना और सुनील ने उन्हें मना किया। हालांकि, शशि और प्रवेश 100-100 रुपये में एक ऊँट पर चढ़ने का सौदा कर लिया। ऊँट पर चढ़ते ही एक अनोखा अनुभव मिला। मना हमारी वीडियो बना रहे थे, और सुनील मजेदार कमेंट्री कर रहा था।

जैसे ही सूर्यास्त का समय हुआ, सम सैंड ड्यून्स का दृश्य और भी खूबसूरत हो गया। सूर्य की किरणें रेत पर पड़कर चमचमाते हुए कण बना रही थीं, और आकाश का रंग बदलते हुए शानदार दृश्य पैदा कर रहा था। ऐसा दृश्य पहलेकिसी ने कभी नहीं देखा था।

धर्मशाला वापसी

सम सैंड ड्यून्स से वापस लौटते समय उन्हें काफी देर तक वाहन का इंतजार करना पड़ा। आस-पास कोई ऑटो नहीं दिख रहा था, तो होटल वापसी कीचिंता सभी को सताने लगी। लगभग 20-30 मिनट के इंतजार के बाद, अचानक एक खाली ऑटो आता दिखा। उससे पूछा तो उसने 400 रुपए की मांग की। चूंकि कोई विकल्प नहीं था, और समय भी काफी हो चुका था, तो बिना किसी हिचकिचाहट के उसे तुरंत 400 रुपए दे देना ही सभी ने सही समझा।

ऑटो में बैठते ही एक राहत का अहसास हुआ, क्योंकि अब सब आराम से धर्मशाला लौटने जा रहे थे। रास्ते में, ऑटो चालक ने बातचीत करते हुए जैसलमेर के अन्य प्रसिद्ध स्थानों के बारे में बताया, जिससे उन्हें वहां की संस्कृति और इतिहास के बारे में और भी जानने का मौका मिला। धर्मशाला पहुँचते ही सबथकान से चूर हो गए थे, लेकिन उनके पास कुछ समय और था, तो पहले खाने का आर्डर देने के लिए होटल में गए। हल्का खाना खाने के बाद, सभी अपने-अपने बिस्तर पर सोने चले गए। वो दिन बहुत लंबा और थकाऊ था, लेकिन सम सैंड ड्यून्स और जैसलमेर की यादें उन्हें एक सुकून का एहसास दे रही थीं।

सफर की समाप्ति

रात 11 बजे की ट्रेन थी, जो उन्हें सीधे बीकानेर ले जाती। सब एक-दूसरे से कह रहे थे कि अब घर लौटने का समय आ गया है। शशि ने उन्हें ट्रेन के समय की जानकारी दी, और सभी जल्दी-जल्दी अपना सामान पैक करने लगे। हम जल्दी ही स्टेशन पहुंच गए थे तो वेटिंग रूम में जाकर आराम से बैठ गए । ट्रेन आते ही सबजल्दी से ट्रेन में चढ़ गए, ट्रेन में कोई खास भीड़ नहीं थी, तो उन्होंने तुरंत ऊपर की बर्थ पकड़ ली। इस पर लेटकर सभी आराम से बैठ गए और कुछ देर बाद गहरी नींद में खो गए।

अगले स्टेशन पर जब ट्रेन रुकी, तो अचानक काफी भीड़ आ गई। लोगों ने एक-एक कर डब्बे में जगह बना ली, लेकिन हमारी बर्थ पहले से सुरक्षित थी। इस तरहसभी ने काफी आराम से यात्रा की। बीकानेर पहुँचने पर नाश्ता करने का मन हुआ, तो स्टेशन पर कुछ हलका-फुलका खाया और फिर पंजाब जाने वाली ट्रेन पकड़ी।

पंजाब की ट्रेन में बैठना थोड़ा मुश्किल था क्योंकि जगह कम थी, लेकिन किसी तरह चारों किसी न किसी तरीके से अपनी सीट पर बैठ गए। थोड़ी देर बाद भटिंडा स्टेशन पर पहुंचे, जहाँ उन्हें पता चला कि फिरोजपुर जाने के लिए ट्रेन बदलनी होगी। जब उन्हे यह जानकारी मिली, तो थोड़ी चिंता हुई कि

कहीं उनकी ट्रेन छूट न जाए, लेकिन किस्मत साथ दे रही थी। अगली ट्रेन भी समय पर आ गई और सबफिरोजपुर की ओर बढ़ने के लिए तैयार हो गए।

कॉलेज वापसी की खुशी

जैसलमेर से लौटने के बाद सफर की थकान तो थी, लेकिन जैसलमेर की अनमोल यादें अब भी तरोताजा थीं और सब उसी में खोए हुए थे। किले की दीवारों में बसा इतिहास, सम सैंड ड्यून्स की रेत पर गुजरें वो पल, और कैफे में बैठकर हवा में बसी ठंडक और सुकून—ये सारी चीजें उनके दिलो-दिमाग में गहराई से बस गई थीं। जैसलमेर की यात्रा ने यह जरूर सिखाया होगा कि बड़े अनुभव छोटे बजट में भी किए जा सकते हैं। सभी बहुत खुश थे कि बिना ज्यादा खर्चे के भी सबने एक अद्भुत और अविस्मरणीय यात्रा का अनुभव किया।

कॉलेज लौटने का मन तो था, लेकिन फिर भी जैसलमेर की उन खास जगहों और वहां के लोगों के चेहरे सबके दिमाग में घूम रहे थे। सब जानते थे कि यह यात्रा हमेशा उनके दिल में एक खास जगह बनाए रखेगी। घर लौटने से पहले सब अपनी कॉलेज की जिंदगी में फिर से लौटने के लिए तैयार थे, लेकिन दिल में उन सफर की यादों के साथ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: हमारे जीवन को बदलती एक अद्भुत तकनीक

राघव श्रीवास्तव
लेखाकर, लेखा द्वितीय

जब मैं छोटा था, तब मैंने कई साइंस फिक्शन फिल्में देखी थीं जिनमें रोबोट और स्मार्ट कंप्यूटर दिखाए जाते थे। उस समय ये सब कल्पना की बातें लगती थीं। लेकिन आज, जब मैं अपने आसपास देखता हूं, तो पाता हूँ कि वह कल्पना सच होती जा रही है। यह सब कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की वजह से संभव हो रहा है।

एआई क्या है? सरल शब्दों में कहें तो एआई एक ऐसी तकनीक है जो मशीनों को सोचने, समझने और सीखने की क्षमता प्रदान करती है। जैसे एक बच्चा धीरे-धीरे सीखता है, वैसे ही एआई भी अपने अनुभवों से सीखती है। यह मानव मस्तिष्क की तरह काम करने की कोशिश करती है, लेकिन कहीं अधिक तेज गति से।

एआई की यह क्षमता कई क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है - चाहे वह स्वास्थ्य हो, कृषि हो या शिक्षा। एआई से मिल रही इन सुविधाओं ने हमारे जीवन को काफी आसान बना दिया है।

हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में एआई : आप सोच रहे होंगे कि एआई कहाँ-कहाँ इस्तेमाल होती है? दरअसल, यह हमारे आस-पास हर जगह मौजूद है। जब आप गूगल पर कुछ खोजते हैं, जब आपका फोन आपका चेहरा पहचानता है, या फिर जब आप ऑनलाइन शॉपिंग करते हैं और आपको सामान की सिफारिशें मिलती हैं - यह सब एआई की ही देन है।

मैंने खुद देखा है कि कैसे मेरे स्कूल में भी एआई का प्रयोग बढ़ रहा है। हमारे शिक्षक अब पढ़ाई को और रोचक बनाने के लिए एआई टूल्स का इस्तेमाल करते हैं। वे हमें ऐसे प्रश्न देते हैं जिनका हल

खोजने में हमारी मदद करती है। मेरी छोटी बहन को गणित सिखाने में एआई आधारित ऐप बहुत मदद करते हैं। वे उसकी प्रगति को ट्रैक करते हैं और उसके अनुसार उपयुक्त अभ्यास प्रदान करते हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र में क्रांति : एआई ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी अद्भुत काम किया है। मेरे पड़ोस में रहने वाले डॉक्टर अंकल बताते हैं कि कैसे एआई बीमारियों की पहचान में डॉक्टरों की मदद कर रही है। वे कहते हैं कि एक्स-रे और एमआरआई स्कैन में छिपी छोटी-छोटी चीजें जो मानवीय आंखों से छूट सकती हैं, एआई उन्हें आसानी से पकड़ लेती है। इससे उन्हें बीमारियों की जल्द पहचान करने और उपचार शुरू करने में मदद मिलती है।

एआई वैज्ञानिकों को नए दवाइयों के विकास में भी मदद कर रही है। वे एआई का इस्तेमाल करके प्रयोगशालाओं में सैकड़ों दवाइयों का परीक्षण कर सकते हैं और उनकी प्रभावशीलता का आकलन कर सकते हैं। इससे नई दवाइयों के विकास में समय और लागत की बचत होती है।

कृषि में एआई का योगदान : भारत एक कृषि प्रधान देश है। पिछले साल मैं अपने गांव गया था, जहां मैंने देखा कि किसान भी अब एआई का इस्तेमाल कर रहे हैं। मौसम की भविष्यवाणी से लेकर फसलों की देखभाल तक, एआई किसानों की बहुत मदद कर रही है।

मेरे चाचा, जो एक किसान हैं, अब अपने खेत में ड्रोन का इस्तेमाल करते हैं जो एआई की मदद से फसल की स्थिति की जानकारी देता है। इससे वे खेतों की निगरानी आसानी से कर सकते हैं और समय पर उचित कार्रवाई कर सकते हैं। एआई आधारित कृषि प्रौद्योगिकियों से उत्पादकता बढ़ी है और किसानों की आय में भी वृद्धि हुई है।

भविष्य की चुनौतियां और अवसर : जहां एआई से बहुत फायदे हैं, वहीं कुछ चुनौतियां भी हैं। नौकरियों पर इसका क्या असर होगा? क्या मशीनें इंसानों की जगह ले लेंगी? मेरा मानना है कि एआई नई तरह की नौकरियां पैदा करेगी। जैसे कंप्यूटर आने के बाद प्रोग्रामर की नौकरियाँ बनीं, वैसे ही एआई भी नए अवसर लाएगी।

हालांकि, यह सुनिश्चित करना होगा कि एआई का विकास मानव कल्याण के लिए हो और न कि उसके विरुद्ध। इसके लिए नीतियों और विनियमों की आवश्यकता होगी ताकि एआई का उपयोग नैतिक ढंग से किया जा सके।

निजता और सुरक्षा : एक महत्वपूर्ण मुद्दा जो मुझे और मेरे दोस्तों को चिंतित करता है, वह है डेटा की सुरक्षा। एआई को काम करने के लिए बहुत सारा डेटा चाहिए। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी निजी जानकारी सुरक्षित रहे और इसका दुरुपयोग न हो।

सरकारें और कंपनियों को डेटा गोपनीयता और सुरक्षा के मजबूत कानून बनाने होंगे। साथ ही हमें भी अपने डेटा के बारे में जागरूक होना होगा और उसका ध्यानपूर्वक उपयोग करना होगा।

शिक्षा का भविष्य : मैं खुद एक छात्र हूं और देख सकता हूं कि एआई शिक्षा को कैसे बदल रही है। व्यक्तिगत शिक्षण, तत्काल फीडबैक, और वर्चुअल क्लासरूम - ये सब एआई की वजह से संभव हो रहा है। मुझे लगता है कि आने वाले समय में हर छात्र के पास एक व्यक्तिगत एआई टीचर होगा जो उसकी सीखने की गति और तरीके के अनुसार पढ़ाएगा।

एआई से शिक्षकों को भी काफी मदद मिलेगी। वे एआई का उपयोग करके छात्रों की प्रगति का विश्लेषण कर सकेंगे और उन्हें निर्देशित करने में मदद मिलेगी। यह शिक्षा को और अधिक उपयोगी और प्रभावी बनाएगा।

हमारी जिम्मेदारी: एआई एक शक्तिशाली टूल है, और हर शक्तिशाली चीज की तरह इसका इस्तेमाल सोच-समझकर करना चाहिए। मैं और मेरे साथी छात्र एआई को समझने और इसका सकारात्मक उपयोग करने की कोशिश कर रहे हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि एआई का विकास मानवता के हित में हो।

हमें एआई के लाभों और खतरों दोनों को समझने की जरूरत है। इसका उपयोग सही तरीके से करके हम अपने भविष्य को और अधिक बेहतर बना सकते हैं।

अपने इस विस्तृत विश्लेषण के अंत में, मैं कहना चाहूंगा कि एआई हमारे भविष्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमारी जिंदगी को आसान बना रही है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम पूरी तरह से मशीनों पर निर्भर हो जाएं। मुझे लगता है कि एआई और मानव बुद्धि का संतुलित मिश्रण ही हमें आगे ले जाएगा।

जब मैं अपने भविष्य के बारे में सोचता हूं, तो मुझे लगता है कि एआई के क्षेत्र में काम करना एक रोमांचक अवसर होगा। शायद मैं भी एआई के क्षेत्र में अपना करियर बनाऊं। क्योंकि मुझे विश्वास है कि एआई की यह यात्रा अभी शुरू ही हुई है, और आने वाले समय में यह और भी रोमांचक होगी।

भारत की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में सीएजी की भूमिका

निखिल तोमर
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (सीएजी) को संविधान द्वारा एक स्वतंत्र और स्वायत्त संस्था के रूप में स्थापित किया गया है। यह संस्थान सरकार के वित्तीय लेन-देन की निगरानी, लेखा परीक्षण और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आर्थिक विकास और सुशासन के संदर्भ में, सीएजी की भूमिका केवल सरकार के खातों का ऑडिट करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सीएजी का परिचय

सीएजी का गठन भारत के संविधान के अनुच्छेद 148 के तहत किया गया है। इसका मुख्य कार्य सरकार के वित्तीय रिकॉर्ड, व्यय और आय का लेखा परीक्षण करना है। सीएजी का दायरा केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, सार्वजनिक उपक्रमों और स्वायत्त संस्थानों तक फैला हुआ है।

अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में सीएजी की भूमिका

1. वित्तीय पारदर्शिता में सुधार

सीएजी सरकार के वित्तीय लेन-देन और खर्चों की गहन जांच करता है। इसके माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि धनराशि का उपयोग उचित ढंग से और आर्थिक रूप से हो रहा है। जब

सरकार के वित्तीय प्रबंधन में पारदर्शिता होती है, तो देश में घरेलू और विदेशी निवेशकों का विश्वास बढ़ता है।

2. भ्रष्टाचार और अपव्यय पर रोक

सीएजी अपने ऑडिट के माध्यम से सरकारी परियोजनाओं और योजनाओं में अनियमितताओं को उजागर करता है। उदाहरण के तौर पर, 2जी स्पेक्ट्रम और कोयला खदान आवंटन जैसे मामलों में सीएजी ने बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार की ओर ध्यान आकर्षित किया। इस तरह के मामलों का खुलासा होने से न केवल सरकारी तंत्र में सुधार होता है, बल्कि जनता और निवेशकों का सरकार पर विश्वास भी बढ़ता है।

3. **सार्वजनिक धन का कुशल उपयोग**

सीएजी सरकारी परियोजनाओं और योजनाओं की समीक्षा कर यह सुनिश्चित करता है कि जनता का धन उचित और कुशल तरीके से खर्च हो रहा है। इसके तहत यह देखा जाता है कि परियोजनाओं का निष्पादन समय पर और बजट के भीतर हो। यह आर्थिक संसाधनों की बर्बादी को रोकने और विकास परियोजनाओं को समय पर पूरा करने में मदद करता है।

4. **नीतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन**

सीएजी विभिन्न सरकारी योजनाओं और नीतियों का ऑडिट कर उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है। यदि कोई योजना अपने लक्ष्यों को पूरा करने में विफल हो रही है, तो सीएजी अपनी रिपोर्ट के माध्यम से उस पर ध्यान आकर्षित करता है। इससे नीतियों में आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं, जो विकास प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाते हैं।

5. **कर प्रणाली को मजबूत करना**

सीएजी टैक्स वसूली और कर प्रशासन का भी विश्लेषण करता है। इसके माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि कर राजस्व का संग्रहण प्रभावी ढंग से हो रहा है और कोई कर चोरी नहीं हो रही। जब कर प्रणाली मजबूत होती है, तो सरकार के पास अधिक वित्तीय संसाधन होते हैं, जिन्हें बुनियादी ढांचे और अन्य विकास परियोजनाओं में लगाया जा सकता है।

6. **सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का मूल्यांकन**

सीएजी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) का भी ऑडिट करता है। इन उपक्रमों की वित्तीय स्थिति और प्रदर्शन की समीक्षा कर सीएजी यह सुनिश्चित करता है कि ये उपक्रम लाभकारी हों और देश की अर्थव्यवस्था में योगदान दें। घाटे में चल रहे उपक्रमों की पहचान कर उन्हें सुधारने की सिफारिश की जाती है।

7. पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

सीएजी पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों से जुड़ी परियोजनाओं का भी ऑडिट करता है। यह सुनिश्चित करता है कि इन संसाधनों का उपयोग स्थायी और आर्थिक रूप से हो। जब प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन प्रभावी होता है, तो यह देश की दीर्घकालिक आर्थिक वृद्धि में सहायक होता है।

8. डिजिटल और तकनीकी पहल

सीएजी ने डिजिटल लेखा प्रणाली और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करना शुरू किया है। इससे लेखा परीक्षण की प्रक्रिया अधिक सटीक और पारदर्शी हो गई है। डिजिटल तकनीकों का उपयोग आर्थिक गतिविधियों की निगरानी और अनियमितताओं का पता लगाने में सहायक होता है।

उदाहरण के माध्यम से सीएजी की भूमिका

1. *2जी स्पेक्ट्रम घोटाला*

सीएजी की रिपोर्ट ने 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन में अनियमितताओं का खुलासा किया, जिससे सरकार को बड़ी आर्थिक हानि हुई। इस रिपोर्ट ने न केवल भ्रष्टाचार को उजागर किया, बल्कि सरकार को सुधारात्मक कदम उठाने के लिए प्रेरित किया।

2. *कोयला खदान आवंटन मामला*

सीएजी ने कोयला खदानों के आवंटन में पारदर्शिता की कमी और आर्थिक हानि की ओर इशारा किया। इस रिपोर्ट ने संसाधनों के उचित प्रबंधन की आवश्यकता को रेखांकित किया।

3. *मनरेगा और अन्य योजनाओं का ऑडिट*

सीएजी ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) जैसी योजनाओं में अनियमितताओं का खुलासा किया। इसके परिणामस्वरूप इन योजनाओं को बेहतर और अधिक प्रभावी तरीके से लागू किया गया।

सीएजी की चुनौतियाँ

सीएजी के सामने कई चुनौतियाँ भी हैं:

- ऑडिट के लिए पर्याप्त मानव संसाधन और तकनीकी उपकरणों की कमी।
- कई बार सीएजी की रिपोर्ट पर राजनीतिक हस्तक्षेप होता है।
- कुछ रिपोर्टों को लागू करने में देरी होती है, जिससे अनियमितताओं को ठीक करने में बाधा आती है।

सुझाव और सुधार के उपाय

1. *स्वायत्तता और स्वतंत्रता*

सीएजी की स्वतंत्रता को और अधिक मजबूत बनाने की आवश्यकता है ताकि यह बिना किसी दबाव के अपने कार्य कर सके।

2. *तकनीकी अपग्रेडेशन*

सीएजी को अत्याधुनिक तकनीकों और डेटा एनालिटिक्स में निवेश करना चाहिए ताकि ऑडिट प्रक्रिया और अधिक प्रभावी हो।

3. *जनता की भागीदारी*

सीएजी की रिपोर्ट्स को सरल भाषा में जनता के लिए उपलब्ध कराना चाहिए ताकि आम नागरिक भी सुशासन में अपनी भूमिका निभा सकें।

निष्कर्ष

सीएजी भारत के वित्तीय और प्रशासनिक ढांचे का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। यह न केवल सरकारी व्यय की निगरानी करता है, बल्कि सुशासन, पारदर्शिता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में भी सहायक है। यदि सीएजी की सिफारिशों को गंभीरता से लिया जाए और इसे और अधिक स्वायत्तता दी जाए, तो यह भारत की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

सीएजी की रिपोर्ट्स और सिफारिशें देश की वित्तीय प्रबंधन प्रणाली में सुधार लाने और संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने में मदद करती हैं। इस प्रकार, भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक को केवल एक लेखा परीक्षक के रूप में नहीं, बल्कि एक विकास और सुधारक एजेंसी के रूप में देखा जाना चाहिए।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि यह मेरी मौलिक रचना है, जो अन्य कहीं भी प्रकाशित नहीं हुई है।

"जीवन का सबसे खूबसूरत सफर: स्पीति"

सुश्री कोमल श्रीवास्तव
लेखाकार/लेखा- प्रथम

मेरी विंटर स्पीति यात्रा का अनुभव

साल 2024 के अंत मे, मैंने स्पीति जाने का फैसला किया और यह यात्रा मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव बनी। हालाँकि लखनऊ से स्पीति की दूरी इतनी ज़्यादा है कि यहाँ अकेले जाना संभव नहीं है, ऐसे में मैंने और मेरे दोस्तों ने 26 अपरिचितों के समूह के साथ जाने का प्लान किया । यह समूह विविधता से भरा था, जिसमें युवा और वरिष्ठ नागरिक दोनों ही शामिल थे। कुछ लोग 23 के थे, तो कुछ 50 के आसपास थे। सभी अजनबी चेहरे थे, दिल्ली से शिमला तक का यह सफर बस से था। यह सफर न केवल साहसिक और रोमांचक था, बल्कि अविश्वसनीय था, (-)28 डिग्री सेल्सियस तापमान देखा जो मेरे जीवन की सबसे अधिक ठंड का अनुभव था। मेरा चेहरा, हाथ, पैर सब जम रहे थे। इसमें दोस्तों और नए परिचितों के साथ बिताए गए पल भी बेहद खास थे। स्पीति वैली की ठंडी हवाएं, बर्फ से ढकी वादियाँ, और बौद्ध संस्कृति ने इस यात्रा को एक अनूठा रूप दिया । यह यात्रा मेरे लिए एक नई चुनौती और अद्भुत अनुभव बन गई।

दिल्ली से शिमला : सफर की शुरुआत

रात के समय, हम दिल्ली से शिमला के लिए बस से रवाना हुए। एक साथ 26 नए और पुराने दोस्तों के साथ सफर करना मजेदार था। एक अजीब सी हलचल और उत्सुकता का माहौल था। हर किसी के मन में सवाल थे—"कैसा होगा ये सफर?", "कैसे लोग होंगे?", "क्या हम यह यात्रा आसानी से कर पाएंगे?" इन सवालों का कोई स्पष्ट जवाब नहीं था, लेकिन बस का इंजन और उसके साथ की हलचल हमें एक उम्मीद दे रहे थे। बस दिल्ली की हलचल से बाहर निकलते हुए निर्धारित अमृत सुखदेव ढाबा पे रुकी। जब हम सुखदेव ढाबे पर पहुंचे, तो वहां का माहौल कुछ खास था—थोड़ी हलचल, रोशनी से जगमगाता वातावरण और कुछ लोग गर्मागरम खाना खाने में व्यस्त थे। हम सभी बस से उतरे और ढाबे

के अंदर एक साथ बैठ गए। वहाँ टीम लीडर ने अपना परिचय दिया और मैने भी सबसे परिचय लिया और उसके बाद तो फिर एक दूसरे से अपनी ज़िन्दगी के अनुभव साझा करने लगे। कोई ऑफिस से छुट्टी लेकर आया था, तो कोई शिमला और स्पीति के बारे में अपनी पुरानी यादें बता रहा था। अचानक से हमें ऐसा लगा जैसे हम एक नए परिवार का हिस्सा बन गए हैं। ढाबे में गर्मागरम पराठे, दाल मखनी और ताजे पकवानों का स्वाद किसी जादू से कम नहीं था और वो जादू ही था, जो रात के इस सफर को खास बना रहा था। एक तरफ जहाँ कुछ यात्री युवा थे तो वहीं कुछ लोग उम्रदराज़ भी थे, जिनके चेहरे पर थकान की झलक थी, मगर उनकी आंखों में यात्रा के लिए उत्साह था। हमारी उम्र के अंतर के बावजूद, हम सभी एक दूसरे से जुड़ने लगे थे।

कुछ समय बाद, जब हम ढाबे से फिर से बस में सवार हुए, तो बस का माहौल एकदम बदल चुका था। अब हम 26 अजनबी नहीं थे—हम एक छोटे से परिवार की तरह महसूस कर रहे थे। हम सभी एक साथ थे, और एक दूसरे के उत्साह से सफर और भी रोमांचक हो गया था। दिल्ली से शिमला का सफर बहुत ही आरामदायक था, लेकिन शिमला का रास्ता पहाड़ी और सुरम्य था, जो सर्दियों में बहुत खास था। शिमला पहुंचते ही बर्फबारी और ठंडी हवा ने हमें सर्दियों की असली महक दी। शिमला का आकर्षण देखने के बाद, हम अपनी यात्रा के अगले चरण के लिए तैयार हो गए।

<u>शिमला से कल्पा : पहाड़ी रास्ते और कैलाश पर्वत</u>

शिमला से हमारा अगला पड़ाव था **कल्पा**, जो किन्नौर जिले में स्थित है। शिमला से कल्पा की यात्रा बहुत ही रोमांचक थी क्योंकि यहाँ के रास्ते पर बर्फबारी हो रही थी और सर्दी का असर हर जगह

साफ दिख रहा था। पहाड़ी रास्तों पर सफर करते हुए, सूरज अपनी किरणें समेट चुका था और आसमान में धीरे-धीरे चाँद की रोशनी फैली जा रही थी।

कल्पा पहुँचते-पहुँचते रात हो गई थी। हम सभी के शरीर में इतनी ताकत नहीं थी कि हम और आगे घूम सकें, और तापमान भी -7 डिग्री तक गिर चुका था। ऐसे में, हमने फैसला किया कि हम अपने होमस्टे में ही रुकेंगे। अपने होमस्टे के अंदर आकर हमें एक अलग ही सुकून मिला। गरमागरम खाना और ताजगी से भरी चाय का स्वाद हमें ताजगी से भर रहा था। यहाँ के लोग भी बहुत मिलनसार थे, उन्होंने हम लोगो का बहुत स्नेह से स्वागत किया।

अगले दिन सुबह सूरज की पहली किरण ने पहाड़ों की चोटी को सोने जैसी रोशनी से नहलाया। हमारा होमस्टे एक ऊँची जगह पर था, और वहां से पूरे गाँव और आस-पास के पहाड़ों का दृश्य दिखाई दे रहा था। यह दृश्य सचमुच किसी चित्रकार के हाथों की कल्पना से भी ज्यादा खूबसूरत था। लेकिन इस खूबसूरत दृश्य में एक और बात थी, जिसने हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

दूर, आकाश के अंतिम छोर पर, **कैलाश पर्वत** का दृश्य अलग ही रूप में उभर कर सामने आ रहा था। उसकी विशाल चोटी, जिस पर बर्फ़ की सफेद चादर बिछी हुई थी, अब सूरज की रोशनी में और भी चमकदार लग रही थी। कैलाश पर्वत, जो अपनी भव्यता और रहस्य के लिए प्रसिद्ध है, अब बिलकुल अलग ही रूप में दिख रहा था। उसकी सफेद बर्फ़, हलके गुलाबी आकाश के साथ मिलकर एक अद्वितीय वैभव बिखेर रहे थे। हम सभी एक पल के लिए खड़े होकर बस उस दृश्य को देखते रहे, जैसे समय थम गया हो। कल्पा मठ में कुछ समय बिताया और उसके शांतिपूर्ण वातावरण में आंतरिक शांति का अनुभव किया और इसने यात्रा को और भी खास बना दिया।

कलपा से नाको (शांति और विराम)

कलपा में एक अद्भुत रात बिताने के बाद, हम सब का अगला लक्ष्य था **नाको**। **नाको** जाने के रास्ते में हमें बर्फीले रास्तों पर यात्रा करनी पड़ी। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए, बर्फ की परतें गहरी होती जा रही थीं। नाको एक बहुत ही सुंदर गांव है जो बर्फ से ढका हुआ था। यहाँ की **नाको झील** , जो इस समय बर्फ से जमी हुई थी वहाँ का दृश्य अविश्वसनीय था। झील का पानी पूरी तरह से जम चुका था। बर्फ की मोटी परत ने झील को एक ठंडी चादर से ढक लिया था, और इसका दृश्य बहुत ही रोमांचक था। आसपास के पहाड़ों की छाया और झील की सफेदी का मिलाजुला दृश्य एक अद्वितीय चित्र जैसा लग रहा था। झील के चारों ओर बर्फ से ढकी हुई झाड़ियाँ और बर्फीली जमीन ने इसे और भी रहस्यमय बना दिया था।

नाको से ताबो: ऐतिहासिक बौद्ध मठ

नाको से ताबो का सफर काफ़ी रोमांचक था। रास्तों पर जमी बर्फ ने कई जगहों पर गाड़ी चलाना मुश्किल बना दिया था। कई बार तो बर्फ इतनी गहरी थी कि गाड़ी के पहिए फंसने लगे थे। ऐसे मे पहियों मे चेन

बाँध के आगे का रास्ता तय करना पड़ा। कुछ स्थानों पर बर्फ के स्लाइड होने के कारण हमें रुकना पड़ा और रास्ता साफ होने का इंतज़ार करना पड़ा । लेकिन जब रास्ते की कठिनाइयाँ खत्म होती थीं, तो जो दृश्य सामने आते थे, वो थकान को तुरंत भुला देते थे।

रास्ते में बर्फ से ढकी नदियाँ, जो कि ठंड में बर्फ के अंदर फंसी हुई है,बहुत ही अजीब और खूबसूरत लग रही थीं। कुछ जगहों पर तो पहाड़ों की चोटी तक बर्फ चढ़ चुकी थी, और वहाँ से गिरने वाली बर्फ के झरने जैसे दृश्य देखकर एक अलग ही शांति का एहसास हो रहा था।

ताबो के पास, स्पीति वेली का ऐतिहासिक मठ (ताबो मठ) है, जो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप मे सूचीबद्ध है। ताबो मठ 1000 साल पुराना है। ताबो मठ में बिताए गए पल सचमुच अविस्मरणीय थे। मठ के दीवारों पर प्राचीन बौद्ध चित्रकला और ग्रंथ बहुत कुछ कह रहे थे। यहां के लोग भी बहुत स्वागत करने वाले थे और हमें बौद्ध धर्म और संस्कृति के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला। ताबो में बर्फ़ीली हवाओं के बीच यात्रा करने का अपना एक अलग ही अनुभव था।

ताबो से काजा : यात्रा का अंतिम पड़ाव

काजा पहुँचते ही सर्दियों की ठंडी हवाओं और बर्फ से ढकी पहाड़ियों ने हमें अपने आगोश में ले लिया। रास्ते में बर्फबारी और अत्यधिक ठंड ने हमारी यात्रा को चुनौतीपूर्ण बना दिया। तापमान गिरता जा रहा था और काजा तक पहुँचते-पहुँचते यह -28°C तक पहुँच चुका था। रास्ते में हर कदम पर हमें बर्फ से ढकी चोटियाँ, गहरी घाटियाँ और कटा हुआ रास्ता दिखाई दे रहा था। काजा में हमने सबसे पहले **की मठ** का दौरा किया, जो बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र है। मठ के शांतिपूर्ण वातावरण ने हमें आध्यात्म की ओर आकृष्ट किया और शांति का अहसास कराया।

क़जा के आसपास के गांवों, खासकर किब्बर गाँव का दौरा किया, जो दुनिया के सबसे ऊँचे बसे हुए गांवों में से एक है। किब्बर में ट्रैकिंग करते हुए हमें स्पीति के कुछ सबसे सुंदर दृश्य देखने को मिले। चारों ओर बर्फ की सफेद चादर बिछी हुई थी, और ठंडी हवाओं के झोंके चेहरे को छूते हुए महसूस हो रहे थे। किब्बर के घर, जो पारंपरिक शैली में बने थे, बर्फ से ढके हुए थे और उनका वास्तुशिल्प भी बहुत अलग था। वहाँ के घरों की छतें और दीवारें बर्फ के एक पतले आवरण से ढकी हुई थीं, जो एक अद्भुत दृश्य उत्पन्न कर रही थीं। किब्बर गाँव के लोग बेहद सरल और संघर्षशील हैं। यहाँ की जीवनशैली बहुत सादा और पारंपरिक है। विंटर में यहाँ की ठंड इतनी ज्यादा होती है कि लोग ज्यादातर घरों में ही रहते हैं, लेकिन उनका जीवन काफी कठोर होता है। उनके पास बर्फ से निपटने के लिए जो साधन होते हैं, उन्हें इस ठंड में खुद को जीवित रखने के लिए प्रयोग करना पड़ता है।

गाँव के लोग कृषि और पशुपालन करते हैं। यहाँ की मुख्य आजीविका बकरियों और याकों के पालन से होती है। इन ठंडे महीनों में याक और बकरियाँ काफी महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि उनके दूध और मांस से गाँववाले अपनी ज़रूरतें पूरी करते हैं। कृषि भी क़ज़ा और किब्बर के लोगों के जीवन का अहम हिस्सा है, लेकिन सर्दियों में बर्फ और कम तापमान के कारण खेती की गतिविधियाँ काफी सीमित हो जाती हैं।

यहाँ के लोग एक मजबूत समुदाय भावना के साथ जीते हैं। किब्बर गाँव में परिवारों का एकजुटता में रहना और कठिन परिस्थितियों में एक-दूसरे की मदद करना बहुत आम है। चाहे बर्फ को हटाना हो या फिर जानवरों की देखभाल करनी हो, गाँववाले मिलकर सभी काम करते हैं। बर्फ के कठिन मौसम में भी उनके चेहरे पर मुस्कान रहती है।

रोमांचक घटना

रोमांचक घटना तब घटी जब हमारी कार एक पहाड़ी रास्ते पर चढ़ते वक्त अचानक फिसलने लगी। घुमावदार रास्तों और बर्फ़ से ढके रास्ते ने हमें बहुत चुनौती दी, लेकिन हमारे ड्राइवर की सूझ-बूझ ने हमें सुरक्षित रखा। उस वक्त हमारे दिलों की धड़कनें तेज हो गई थीं, लेकिन हम सभी ने मिलकर इस मुश्किल को आसानी से पार किया।

<u>यात्रा का अनुभव</u>

दिल्ली से स्पीति और फिर स्पीति से दिल्ली लौटने का अनुभव मानसिक और भावनात्मक रूप से बहुत गहरा था। इस यात्रा ने मुझे यह समझने का मौका दिया कि हमारे जीवन में कभी-कभी हमें केवल शांति

की आवश्यकता होती है। स्पीति ने यह सिखाया कि जीवन को सादगी में जीने से ही असली खुशी मिलती है।

हमारे साथ यात्रा करने वाले लोग भी अब अलग-अलग जगहों से जुड़ गए थे, लेकिन यात्रा के दौरान बिताए गए वो पल, वो हंसी-मज़ाक, वो चाय की बातें, और वो अद्भुत दृश्य हमेशा के लिए हमारी यादों में बसी रह गई।

यात्रा ने हमें सिखाया कि दुनिया में सबसे सुंदर चीज़ें वही हैं जो हमें अपने भीतर और अपने आस-पास की सादगी में मिलती हैं।

यह यात्रा न केवल एक यात्रा थी, बल्कि यह एक जीवनशैली मे बदलाव का अनुभव भी था।

यह यात्रा मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव रही। स्पीति घाटी की सर्दियों में बर्फ से ढकी चोटियाँ, शांत गाँव और ऐतिहासिक मठों का दृश्य मंत्रमुग्ध कर रहा था। इस यात्रा ने मुझे यह सिखाया कि प्रकृति और जीवन के छोटे-छोटे हिस्से हमें संतुष्टि और शांति का अहसास दिलाते हैं।

पद्य संगम

प्रयागराज में कुम्भ

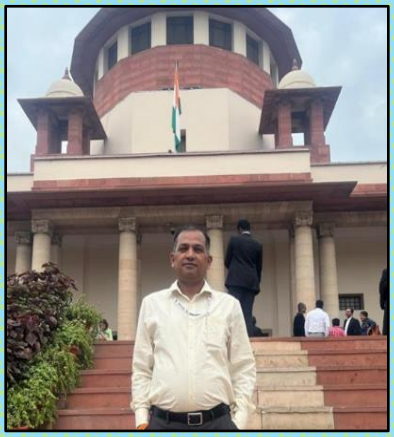

श्री राघवेंद्र सिंह
वरिष्ठ लेखाधिकारी, लेखा-प्रथम

कुम्भ की छठा अजब निराली है,
आस्था के समुद्र में डूबे नर-नारी, कल्पवासी और सन्यासी हैं ।
तम्बू कनातों से पच्चीस सेक्टर का संसार बस गया है,
मार्गों के नाम तुलसी, शंकराचार्य और माधव पड़ गया है।
रास्ते लोहे के और इकतीस पीपा पुल बनाये हैं,
चार हज़ार हेक्टेयर में अलौकिक दुनिया बसाये हैं ।
संतो, सन्यासियों,कल्पवासियों का लग गया मेला है,
उनको निहारते, शीश नवाते जनता का रेला है।
कुछ पुण्य तो कुछ धन कमाने आये हैं,
सभी माँ गंगा की गोद में आश्रय पाए हैं ।
दूर-दूर तक धर्म ध्वजा लहरा रही है,
सनातन धर्म की गाथा गा रही है ।
संतो के तिलक भी पहचान बताते हैं,
कोई रामानंदी तो कोई त्रिपुंडी लगाते हैं
कोई संत राख से धुनी रमाये बैठा है,

तो कोई संत भगवा लहराये चलता है ।

सब ओर कुम्भ की छटा निराली है,

कही ममतामयी धूप, तो कही चाय की प्याली है ।

कुम्भ में त्रिवेणी अमृत बरसाने वाली है,

संक्रांति, अमावस्या और पंचमी प्रबोध देने वाली है ।

अक्षयवट, द्वादश माधव साक्षात आशीर्वाद दे रहे हैं,

कुम्भ नगरी के तीन अग्नि कुंड सभी को ताप दे रहे है ।

दसों दिशाओं में स्वस्तिवाचन की गूँज है,

चहु ओर यज्ञ के मंत्रो का जोर है ।

सर पर गठरी धरे पैदल ही चले आ रहे हैं,

मन में पुण्य की अभिलाषा लिए बढे आ रहे हैं ।

सर का बोझ तिनके सा लगता है,

दूरी कितनी भी हो चंद कदम सा दिखता है ।

त्रिवेणी संगम के बुलावे पर प्रयाग आ रहे हैं,

बूढ़े माँ-बाप और बच्चों को भी साथ ला रहे हैं ।

संगम में एक डुबकी से सब पाप मिटेगा,

यह जीवन ही नहीं अगला जन्म भी सुधरेगा ।

आस्था का संगम हिलोरे ले रहा है,

हर एक दिशा में जय घोष हो रहा है ।

अखाड़ों की शोभा और भी निराली है,

आशीर्वाद पा रहे देशी-विदेशी नर-नारी हैं ।

कोई रुद्राक्ष की माला से तन ढके है,

कोई राख की चादर से तन लपेटे हुए है ।

गुफाओं, कंदराओं और वनों के अगिनत सन्यासी आये हैं,

अपने साथ धर्म, जप, तप का ज्ञानप्रकाश भी लाये हैं ।

कोई संतो की फोटो तो कोई इंटरव्यू ले रहा है,

तो कोई इन सबके बीच जपतप कर रहा है ।

जिसकी जैसी भावना वैसा प्रसाद पा रहा है,

तो कोई भण्डारे में छक कर पूड़ी उड़ा रहा है।

अविरल नारायणी माँ गंगा से सब प्यार पा रहे हैं,

सूर्यपुत्री यमुना की गोद में संतोष पा रहे हैं ।

दूर देशों से नर नारी ही नहीं पक्षी भी आये हैं,

सभी अपनी आत्मा को तृप्त कर पुण्य पा रहे हैं ।

अमृत की वर्षा का लाभ सबको लाभ मिल रहा है,

यज्ञ, जप, तप, दान का पुण्य प्रताप मिल रहा है ।

अलौकिक कुम्भ की छठा निराली है,

आस्था के समुद्र में डूबे नर-नारी, कल्पवासी और सन्यासी हैं ।

मित्रता

नीरज भाटिया
सहायक लेखाधिकारी, लेखा द्वितीय

“इंसा भले ही हाथों से खाली हों,
जीवन की चादर में कितने ही छेद लिए,
हाशिए पर ठहरा इंसा ही सही,
सूरत और संसाधन कमतर भी तो क्या,
है एक मित्र ने कब दुत्कारा,
मित्रता में 'कद'-देख पुकारा,
है जीवन में उतार-चढ़ाव यहाँ,
भावनाओं में बहता कभी शीतल-प्रवाह,
कभी उबलता ज्वार-भाटे का वेग प्रगाढ़,
रिश्ते भी यहाँ मौसम की तरह,
आते-जाते, बनते-बिखरते, मेघों के समान,
मन रहता रत नित चिंतन में,
जीवन के गहरे इस सरोवर में,
ऐसे में बसन्ती-ऋतु समान,
वो सुमधुर महक, वो पपीहे का गान,

जब लिए मित्र बाहों में भरे,

छाती से लगाने को आतुर हो,

तो भला है कोई जीव यहाँ,

धरा पर जो न गान करे,

उस मित्र का मान-सम्मान करें,

जब 'कृष्ण' ही मिलने आए हों,

तो सुदामा कैसे अपनी सुध-बुध का भान धरे,

सुदामा कैसे सुध-बुध का भान धरे.."

जिग जिगलर ने सच ही तो कहा है कि “अगर आप एक दोस्त की तलाश में निकलेंगे, तो दोस्त ढूँढना दुर्लभ बात हो जायेगी लेकिन अगर आप दोस्त बनने के लिए बाहर निकलेंगे तो आप हर जगह दोस्त पाएंगे”..।

विकसित भारत 2047

नाज़िया कादिर
लेखाकार, लेखा द्वितीय

2047 का है सपना महान,
नव भारत का गूंजे गान।
आर्थिक मजबूती की हो पहचान,
हर हाथ में हो कर्म का सामान।

शिक्षा का दीप हर घर जले,
ज्ञान की गंगा सब तक बहे।
नवाचार से हो देश समृद्ध,
प्रौद्योगिकी में बने विश्व - विख्यात।

नारी शक्ति की हो जय-जयकार,
हर क्षेत्र में उनका हो विस्तार।
समान अधिकार, समान सम्मान,
भारत की बेटियां करें नए आयाम'।

स्वास्थ्य सेवाएं हो सुलभ और सस्ती
हर जीवन में हो खुशहाली बसती
हर नागरिक रहे स्वस्थ और तंदरुस्त,
संवेदनशील हो हर चिकित्सा व्यवस्था ।

समावेशी विकास का हो आधार,
हर कोने में पहुंचे प्रगति का संसार।
न जात-पात, न भेदभाव,
सभी के लिए हो समान अधिकार।

प्रकृति के संग करे नवीनीकरण,
हरियाली का बढ़े संरक्षण।
सौर ऊर्जा और स्वच्छ प्रयास,
संवरे पर्यावरण, हो सुखद विकास।

2047 का भारत बने मिसाल,
हर दिशा में हो नव-प्रकाश।
तरक्की के शिखर पर हो उड़ान,
विकसित भारत महान।

अनन्त की खोज

दीप कुमार शुक्ला
पर्यवेक्षक, लेखा द्वितीय

विराट अन्तरिक्ष के अणु सदृश्य लोक में,

अनेकशः हैं ग्रह, रवि अनेकशः हैं चन्द्रमा ||

है इन्हीं में एक जिसमें जीव सृष्टि खेलती,

जिन्हे विकास पथ पर ये प्रकृति सदा धकेलती ||

सृजन विभिन्न प्राणियों का है इन्हीं के फलस्वरूप,

सभी में प्राण एक ही, परन्तु हैं अनेक रूप ||

ब्रह्म रूपी आत्मा समस्त मूलाधार है,

है बस रहा सभी में एकमात्र निराकार है ||

सत्य क्या असत्य क्या, हूँ मैं इसी सोच में,

शून्य पर सवार मैं अनन्त की हूँ खोज में ||

वन में कछुआ रहता था

तरुण सक्सेना
सहायक लेखाधिकारी/लेखा-प्रथम

एक वन में कछुआ रहता था
खरहे को मित्र वो कहता था
दिन भर वे साथ रहा करते
संग भोजन संग क्रीडा करते
एक दिन खरगोश को सूझी क्या
कच्छप से बोला सुनो सखा
क्यों ना एक दौड़ लगाएँ हम
देखें आता है कौन प्रथम
अविलंब कूर्म को भान हुआ
निश्चित इसको अभिमान हुआ
फिर भी बोला मेरे भाई
यह बात भला क्यों मन आई
है कोई नहीं कहीं ऐसा
जो भाग सके तेरे जैसा
और मेरी तो फिर बात ही क्या
सम्मुख तेरे औकात ही क्या
सुन कर खरहे ने तंज कसा
तेरे दिल में है खोट बसा
तू हार के डर से डरता है
प्रलाप अनर्गल करता है
तब कछुए ने हामी भर दी
बोला जैसी तेरी मरजी
तय हुआ कि दौड़ लगाएंगे
उस वृक्ष को छू कर आएंगे
जो स्थित वन की सीमा पर
जब देखें हम दक्षिण मुख कर
जो तरु तक पहले जाएगा
वो ही विजयी कहलाएगा
हुई शुरू दौड़ दोनों दौड़े
एक तेज़ी से तो एक धीरे

देखा तो पलक झपकते ही
कछुआ गया पीछे छूट कहीं
प्रसन्न शशक का चित्त हुआ
पा लूँगा विजय निश्चिंत हुआ
सोचा कछुआ है दूर अभी
और समय शेष भरपूर अभी
क्यों न थोड़ा सुस्ता लूँ मैं
छोटी सी एक निद्रा लूँ मैं
ज्यों ही निद्रा से जागूँगा
गंतव्य तुरत मैं पा लूँगा
यह सोच के उसने किया शयन
और मूँद लिए दोनों ही नयन
दिन भर फिर वह सोता ही रहा
पल-पल अपना खोता ही रहा
कच्छप तो मगर चलता जाता
मेहनत से नहीं था कतराता
नन्हें-नन्हें डग भरता था
विश्राम न कतई करता था
पूरा दिन धीमे-धीमे चल

वह पहुँच गया इच्छित स्थल
हुई सांझ शशक की आँख खुली
अरे यह क्या यह तो शाम ढली
झटपट भागा पर क्या देखा
कछुए ने लांघी विजय रेखा
अत्यंत हुई मन में ग्लानि
मैं तो एक मूरख अभिमानी
करता न दंभ जो मैं खुद पर
मिलती ये हार मुझे क्यों कर
जो खुद पर अति अभिमान करे
निज का ही निज नुकसान करे
मुझसे तो श्रेष्ठ यह कछुआ है
जिसने दी आज ये शिक्षा है
करते यदि काज लगन से हम
घबराते नही उद्यम से हम
तो मिलती सफलता निश्चित है
नहीं इसमें संशय किंचित है
हाँ मिलती सफलता निश्चित है
नहीं इसमें संशय किंचित है

मुझे घर बहुत याद आता है

ज्योति यादव
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक/आईसीसा, नोएडा

मुझे घर बहुत याद आता है

वो भाई बहन का झगड़ा, मम्मी पापा का प्यार,

वो गाँव की गलियां और घरवालों का दुलार,

वो रविवार को आने वाले रंगीन अखबार पर लड़ाई,

वो मम्मी के हाथों से बनी स्वेटर की बुनाई,

वो देर रात तक पापा के आने का इंतजार करना,

वो अंग्रेजी का एक पेज पढना और गणित के सवाल हल करना,

वो मम्मी से जिद्द करके फ्रॉक सिलवाना,

और पापा के आते ही उसे पहनकर दिखाना,

वो हॉस्टल जाते समय मन कडा करके नकली मुस्कान के साथ अपने आप में सिमटना,

वो हॉस्टल के कमरे की खिड़की से पापा को वापिस आते देख सिसकना,

वो नौकरी के नियुक्ति पत्र को देखकर खुश होना,

लेकिन पहली नियुक्ति ही चेन्नई देख मन ही मन बिलखना,

वो मन कडा करके कार्यालय में कार्यग्रहण करना,

वो पापा के PG से मुड़ते ही चीत्कार कर रोना,

वो पहली बार अपने जीवनसाथी से मिलना,

वो रिश्ता पक्का होते ही परिवार से दूर जाने के दिन गिनना,

वो आखिरकार शादी के दिन का भी आ जाना,

और बिलखते हुए ससुराल की गलियों में खो जाना,वो नया परिवार, नया माहौल सब कुछ नया नया सा दिखना,

वहाँ अपने मम्मी पापा को छोड़ हर किसी का दिखना,

और फिर दिल का ज़ोर से चीखकर कहना -

“मुझे अपना घर याद आता है,

माँ बाप याद आते है,

भाई बहन याद आते है,

अपना गाँव याद आता है,

वो गलियाँ याद आती है,

ससुराल चाहे कितना भी अच्छा हो,

पर **मुझे अपना घर बहुत याद आता है**। ”

स्त्री का संतुलन

ऋतु धीमान
स. प्रशासनिक अधिकारी/आईसीसा,नोएडा

सुबह की किरणों में जब जगती है धरा,
उसकी आँखों में सजता है हर सपना नया।
चूल्हे से लेकर दफ्तर की राह तक,
वह हर जिम्मेदारी निभाती है हंसते-हंसते।

बच्चों के बस्ते से लेकर दफ्तर के फाइलों तक,
हर काम में उसका समर्पण झलकता है।
बनाती है मकान को प्रेम से घर,
बाहर की दुनिया में भी सम्मान बढ़ाती है।

वह वो शक्ति है जो थककर भी रुकती नहीं,
हर मोड़ पर उसे चुनौती मिलती, पर वह झुकती नहीं।
कभी ऑफिस की मीटिंग, कभी घर का काम,
हर जिम्मेदारी में वह खुद को ढालती है आराम।

दोपहर में लंचबॉक्स में प्यार भरती,
फिर दफ्तर में बैठकर खुद को सजा रही है।
हर टास्क में परफेक्शन ढूंढती,
हर पल नई मंजिल की ओर झुकी है।

घर के काम हों या दफ्तर की मीटिंग,
हर जगह वह अपने आप को संभालती है।

चूल्हे की गर्मी में वह स्वादिष्ट व्यंजन पकाती है,
तो लैपटॉप की स्क्रीन पर फाइलें भी जमाती है।

कभी माँ बनकर सिखाती है संस्कार,
कभी बॉस बनकर देती है काम को नया आकार।
हर भूमिका में वह बेमिसाल है,
नारी का ये संतुलन अद्भुत, अनमोल है।

उसके सपने भी ऊँचे हैं, और कदम भी तेज़,
परिवार हो या दफ्तर, हर जगह उसकी है पहचान।
वह न हार मानती, न शिकायत करती,
हर संघर्ष में नयी राह गढ़ती।

रात के अंधेरे में जब थककर सब सो जाते,
वह बैठकर अपनी सोचों को सजाती।
बनाती नए सपने, रचती नए रास्ते,
और अगले दिन फिर नए जोश से जागती।

उसकी शक्ति, उसकी करुणा, उसकी सहन शीलता,
हर कदम पर उसे महान बनाती है।
घर और काम का ये अनोखा संतुलन,
वह निभाती है जैसे साज पर मधुर धुन।

स्त्री है वह, जो हर रिश्ते को सँवारती,
घर को खुशियों से, सपनों से सजाती।
बाहर की दुनिया में भी अपना नाम कमाती,
लेकिन कभी घर की दीवारों को न भूल पाती।

उसके कदम कभी रुकते नहीं,
हर मुश्किल में वह झुकती नहीं।

घर और काम, दोनों में है उसकी पहचान,
वह नारी है, जिसकी गाथा है महान।

यह कविता स्त्री के उस संतुलन को समर्पित है, जो वह हर दिन जीती है—घर और काम के बीच।
उसकी शक्ति और स्नेह दोनों को एक साथ दर्शाती है।

कृष्ण जन्म कथा

सुरेशचन्द्र जोशी
लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)/लेखा द्वितीय

भाद्र माह की रात अंधेरी, बारिश होती थी घनघोर।
कृष्ण पक्ष की तिथी अष्टमी, प्रकट हुए थे माखनचोर।
दुष्ट कंस ने मातु पिता को, दिया अकारण कारागार।
जन्म लिया जब वासुदेव ने, खुले जेल के सारे द्वार।।१।।

पहरेदार जेल के जितने, पड़े हुए थे सब चुपचाप।
रोक न पाए अपनी निद्रा, ताले टूटे अपने आप।
पितु वसुदेव देवकी माता, की जन्मी अष्टम संतान।
धर्म स्थापना मुख्य लक्ष्य था, और सनातन का उत्थान।।२।।

डलिया में लेकर कान्हा को, पहुँचाना था गोकुलधाम।
काम बहुत दुरूह दिखता था, लेकिन देना था अंजाम।
यमुना नदी बहुत उफनाई, आया था सैलाब अथाह।
चरण पखार लिए माधव के, दी कृष्णा ने उनको राह।।३।।

शेषनाग ने अपने फन से, करी छाँव तब प्रभु के शीश।
अपनी लीला पर मुस्काये, दिया शेष को अति आशीष।
लेकर जब पहुँचे गोकुल वे, यमुनाजी को किया प्रणाम।
जन्म दिए वसुदेव देवकी, मिला नंद यशुदा का नाम।।४।।

लेकर अपने सँग कान्हा को, चले नंद बाबा के ग्राम।
माया पहले से जन्मी थी, नंद और यशुदा के धाम।
अंक लिटा यशुदा माता के, और लिया माया को साथ।
ले वसुदेव चले मथुरा को, दिया देवकी माँ के हाथ।।५।।

ताले बन्द हो गए फिर से, बन्द हो गया कारागार।
रुदन सुना जब उस कन्या का, जाग उठे सब पहरेदार।
खबर मिल गई दुष्ट कंस को, आ पहुँचा लेकर तलवार।
छीन लिया माँ से कन्या को, हँसने लगा दुष्ट खूँखार।।६।।

माया की हत्या करने को, उद्यत हुआ कंस शैतान।
निकल कंस के क्रूर हाथ से, जा पहुँची माया असमान।
रूप अष्टभुज लेकर बोली, धरती पर आया वह बाल।
घड़ा भरा तेरे पापों का, बहुत सन्निकट तेरा काल।।७।।

स्वप्न जो पूरे नहीं हो सके

श्री शशांक त्रिवेदी
लेखाकार/लेखा- प्रथम

मैं नहीं बनना चाहता
तुम्हारे कदमों की बेड़ियाँ
बेड़ियाँ, जो तुम्हें बांध दें
किसी ऐसे शख़्स के साए से
जो ख़ुद भटक रहा हो
तलाश में अपने अस्तित्व की
जैसे भटकते हैं धूमकेतु
एक अंतहीन ब्रह्मांड में

मैं नहीं बनना चाहता
मारीच सा आकर्षक मृग
जिसके छद्म सौंदर्य पर मोहित
होकर कोई पवित्र सीता
छली जाए किसी आडंबर में
जैसे रेगिस्तान में छले जाते हैं
उष्णता से पीड़ित मुसाफ़िर
मरीचिका पर विश्वास करके

मैं नहीं बनना चाहता
तुम्हारे किसी दुःख का कारण
तुम्हारी निश्छल आशाओं को
तोड़ने का बोझ हृदय पर लेकर
मैं सिर नहीं झुकाना चाहता हूँ
परमेश्वर के समक्ष,
जैसे ढलता है सूरज
आधी दुनिया को
अँधेरे में रखने का
पश्चाताप अपने हृदय में लिए

मैं बनना चाहता हूँ
तुम्हारी किसी मुस्कान की वजह,
तुम्हारे लक्ष्य कीओर अग्रसर
एक सार्थक कदम
तुमसे कभी कोई पूछे
विश्वास का नाम तो

बेझिझक इंगित कर सको मुझे
हँसती रहो ठीक ऐसे
जैसे पहली बरसात के बाद
धरती के कैनवास पर
ईश्वर फेंकता है हरीतिमा ।

जब नाम बड़ा कर लेंगे

मनोज कुमार, वरिष्ठ लेखाकार
लेखा- द्वितीय (लखनऊ शाखा)

घर की चार दीवारों से सोचा की आज़ाद हो गई जिंदगी,

आज़ाद हो गये तो समझ आया असल तो अब कैद हो गई जिंदगी।

अब तो माँ की डांट की आवाज ही नहीं आती,

सुनने को कान तरस गये 'अरे खाना क्यूँ नहीं खाती।'

पढ़ाई – लिखाई के चक्कर में दूसरे शहर तो आ गये,

जब घर की याद आती तो आखों में आँसू आ जाते।

बस उस दिन का इंतज़ार है जब माँ-बाबा का सर गर्व से ऊंचा कर देंगे,

अब उस दिन चैन पड़ेगा जब नाम बड़ा कर लेंगे।

धन्य माता पिता

मनोज श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखाकार/ लेखा- द्वितीय (लखनऊ शाखा)

बात उन दिनों की है जब मेरे माता-पिता जीवित थे।
हम सभी लोग अपना जीवन माता-पिता के साथ काट रहे थे।
यह कहते हैं ना कि समय हमेशा एक जैसा नहीं होता
समय ने करवट ली, पिता जी की अचानक से तबियत
खराब हो गई, इलाज के दौरान ही उनकी मृत्यु हो गई
हम पाँचों भाई-बहन दहलीज के उस पड़ाव पर पहुंच गये,
जिसमें हम लोगों ने सपने में भी नहीं सोचा था कि,
हमारे पिता जी की मृत्यु हो जायेगी।

हमारा बसा-बसाया परिवार टूट गया,
रिश्तेदारों ने भी मौका नहीं छोड़ा
सभी ने किनारा करना शुरू कर दिया,
ऐसे में हमारी माता जी ने हिम्मत नहीं हारी
जो कभी अकेले बाहर नहीं निकली थीं,
वह मां सभी रिश्तेदारों के ताने सुने,
कि घर की बहू नौकरी करने जायेगी,
हम सभी लोगों की नाक कट जायेगी।

पर उन्हीं रिश्तेदारों में कोई एक अपना निकला,
और आगे आकर कहा नहीं दीदी तुम नौकरी करो

और बच्चों का लालन पालन करो,
वह थे मेरे मामा जी,
हमारी माता जी ने हिम्मत की और हम सभी पाँचों भाई-बहनों को लेकर अकेले निकल
पड़ी दुनियां से बचाने, माँ ने पिता जी की नौकरी की
और हम सभी का पालन-पोषण किया, पूरी जिन्दगी अपने लिये कुछ नहीं सोचा
जो भी किया हम सभी भाई-बहनों के लिये किया।

धीरे-धीरे गाड़ी फिर से पटरी पर आने लगी,
हम सभी भाई-बहनों की पढ़ाई लिखाई शुरू हो गई,
17 वर्ष बीत गये, सब ठीक ठाक चल रहा था,
एक बार फिर से उसी प्रकार की घटना घटी, माता जी की तबीयत अचानक खराब हो गई।

उनकी बाई-पास सर्जरी करानी पड़ी,
फिर भी तबीयत ठीक ना हो सकी
दो महीने बाद उनकी भी मृत्यु हो गई,
मैं भाइयों में सबसे बड़ा था, मुझे नौकरी मिली
मैंने सभी भाई-बहनों को शिक्षा दिलाई, आज सभी नौकरी करते हैं,
एवं छोटी बहन की शादी हो गई।

आज जब समय आया माता जी के लिये कुछ करने का
तो वह इस दुनियां में नहीं हैं, पर उनका आर्शीवाद
हम सब पर है, भगवान से प्रार्थना है कि
जब भी इस धरती पर मेरा जन्म हो तो
मुझे वही माता-पिता मिलें, धन्य होते हैं माता-पिता।

हिंदी कार्यशाला
HINDI WORKSHOP

हिन्दी पखवाड़ा 2024
कवि सम्मेलन
दिनांक : 30.09.2024 (3 बजे से)
स्थान : कार्यालय के क्रीडा परिसर में
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
एवं
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज
हिंदी पखवाड़ा - 2024
दिनांक: 14.09.2024 से 29.09.2024
समापन: 30.09.2024

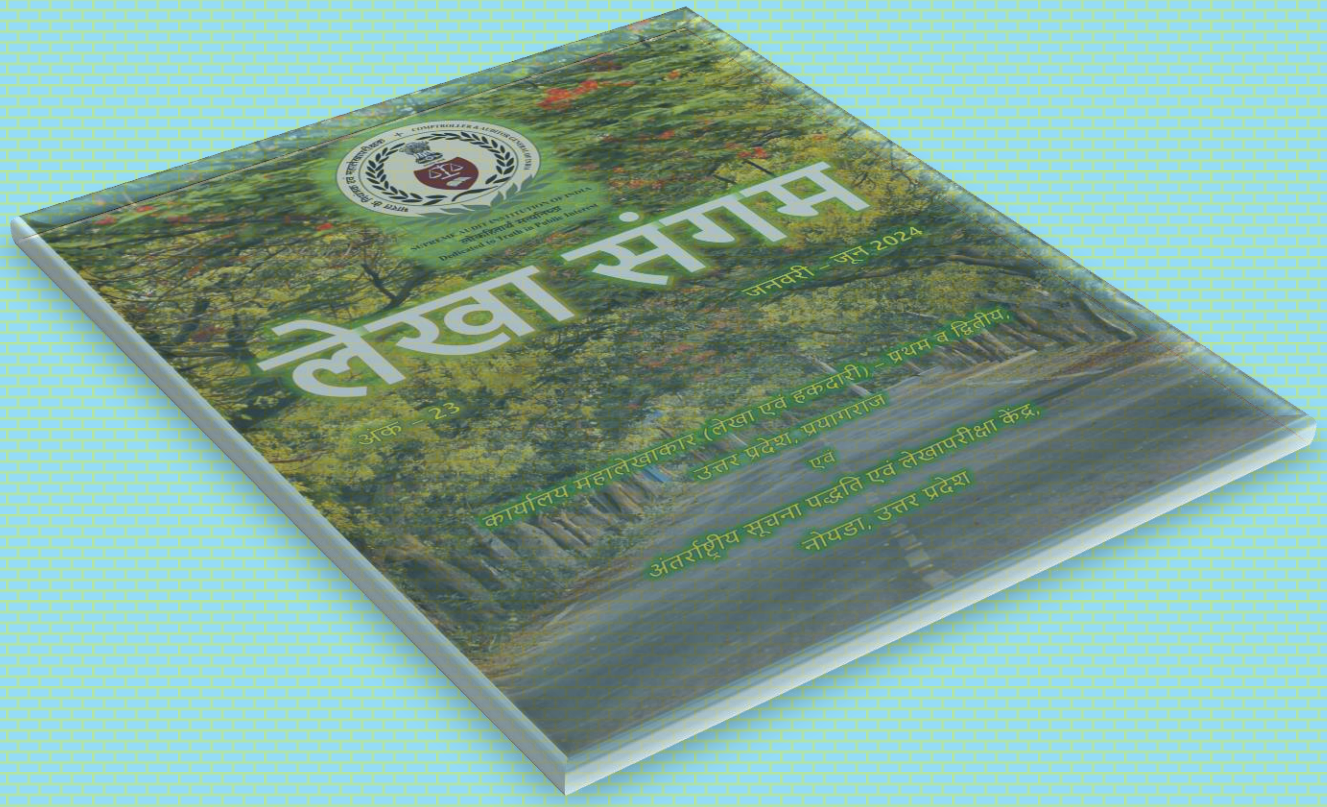
लेखा संगम
जनवरी – जून 2024
अंक – 23
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – प्रथम व द्वितीय,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज
एवं
अंतर्राष्ट्रीय सूचना पद्धति एवं लेखापरीक्षा केंद्र,
नोयडा, उत्तर प्रदेश